ओ३म्

वैदिक संस्कृति का उद्घोषक

वैदिक सार्वदेशिक

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा, नई दिल्ली का साप्ताहिक मुख-पत्र

शुल्क :- एक प्रति 5 रुपया (भारत में) वार्षिक 250 रुपये तथा आजीवन 2500 रुपये

वर्ष 15 अंक 6 कुल पृष्ठ-8 2 से 8 जनवरी, 2020 दयानन्दाब्द 194 सृष्टि सम्वत् 1960853120 सम्वत् 2076 मा. शु.-06

सार्वदेशिक सभा चलायेगी गोरक्षा महा अभियान

आर्य समाज कोलकाता के 134वें वार्षिकोत्सव के अवसर पर

सभा प्रधान स्वामी आर्यवेश जी की घोषणा

प्रसिद्ध वैदिक विद्वान् डॉ. ज्वलन्त कुमार शास्त्री, युवा संन्यासी स्वामी श्रद्धानन्द एवं आर्य प्रतिनिधि सभा बंगाल के प्रधान श्री श्रीराम आर्य जी ने किया घोषणा का स्वागत

आर्य समाज कोलकाता का 134वाँ वार्षिकोत्सव 21 दिसम्बर, 2019 से 29 दिसम्बर, 2019 तक ऋषिकेश पार्क आम्हर्स्ट्रीट, कोलकाता में हर्षोल्लास के साथ सम्पन्न हुआ। 21 दिसम्बर को भव्य शोभा यात्रा का आयोजन किया गया जिसमें हजारों छात्र–छात्राओं तथा आर्यजनों ने भाग लेकर आर्य समाज अमर रहे के नारों से गलियों तथा बाजारों को गुंजा दिया। निरन्तर 9 दिन तक चलने वाले इस वार्षिकोत्सव में ऋग्वेद पारायण यज्ञ एवं विभिन्न महत्त्वपूर्ण सम्मेलनों एवं कार्यक्रमों का आयोजन किया जाता है। निरन्तर 9 दिन तक अपने प्रवचनों एवं व्याख्यानों से आर्य जनता को ज्ञान लाभ प्रदान करने वाले आर्य जगत् के प्रतिष्ठित विद्वान् डॉ. ज्वलन्त कुमार शास्त्री जी जहां ऋग्वेद पारायण यज्ञ के ब्रह्मा पद पर सुशोभित रहे वहीं मुख्य वक्ता के रूप में भी उन्होंने अपनी महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाई, उनके अतिरिक्त युवा संन्यासी, प्रखर वक्ता स्वामी श्रद्धानन्द जी, विदुषी आर्य उपदेशिका सुश्री अंजलि आर्या भी पूरे कार्यक्रम में अपने व्याख्यानों एवं प्रवचनों से जनता को मन्त्र मुग्ध करते रहे। इसी क्रम में उत्सव के आखिरी तीन दिनों के लिए सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान स्वामी आर्यवेश जी तथा मिशन आर्यावर्त यू–ट्यूब चैनल के निदेशक ब्र. दीक्षेन्द्र आर्य भी उत्सव में सम्मिलित हुए।

उत्सव के दौरान संस्कृत एवं संस्कृति सम्मेलन, वेद सम्मेलन, नारी शक्ति सम्मेलन, गोरक्षा सम्मेलन, सत्यार्थ प्रकाश सम्मेलन व युवा प्रतिभा सम्मेलन के अतिरिक्त बांगला भाषा में प्रकाशित ऋग्वेदादि भाष्य भूमिका एवं सत्यार्थ प्रकाश का विमोचन एवं वैदिक विद्वान पं. आत्मानन्द जी शास्त्री का अभिनन्दन समारोह भी आयोजित किया गया। प्रतिदिन प्रातः यज्ञ के उपरान्त यज्ञ के ब्रह्मा डॉ. ज्वलन्त कुमार शास्त्री, स्वामी श्रद्धानन्द जी व स्वामी आर्यवेश जी के प्रवचन तथा सुश्री अंजलि आर्या का भजनों का कार्यक्रम चलता था। 11 से 1 बजे तक बंगला भाषा में विशेष कार्यक्रम का आयोजन किया जाता था इसी प्रकार भोजन के उपरान्त 4 से 6 बजे तक पुनः बंगला भाषा में कार्यक्रम आयोजित होता था। 6 से 6.30 बजे तक नियमित संन्ध्या एवं भजनों का कार्यक्रम सुश्री अंजलि आर्या उनके सहयोगी श्री नेत्रपाल आर्य तथा बंगाल के विद्वान श्री अपूर्वदेव शर्मा के भजनों का प्रभावशाली कार्यक्रम चलता था। वेदपाठ एवं बंगला भाषा के कार्यक्रमों में मुख्य रूप से पं. देवनारायण तिवारी, पं. आत्मानन्द शास्त्री, पं. कृष्णदेव शास्त्री, पं. वेद प्रकाश शास्त्री, पं. योगेश राज उपाध्याय, पण्डिता अर्चना शास्त्री, पं. मधुसूदन शास्त्री, पं. नचिकेता शास्त्री, पं. अपूर्वदेव शास्त्री आदि ने अपनी महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाई। यहां यह भी उल्लेखनीय है कि इन विद्वान पंडितों के द्वारा ही बंगाल के ग्रामीण क्षेत्रों में आर्य समाज का प्रचार–प्रसार किया जा रहा है। क्योंकि इनमें से अधिकतर को बंगला भाषा, संस्कृत तथा हिन्दी भाषा का विशेष अभ्यास है और यह अपनी बात साधारण जनता तक पहुंचाने में कुशल तथा सक्षम हैं। इस पूरे वार्षिकोत्सव में इन पण्डित वर्ग की भूमिका अत्यन्त महत्त्वपूर्ण होती है।

वार्षिकोत्सव में स्वामी ओंकारानन्द जी, स्वामी दयानन्द जी कर्नाटक, स्वामी सवितानन्द जी, मेजर विजय आर्य चण्डीगढ़, ब्र. नकुलदेव व धनेश्वर बेहरा, गुरुकुल वेदव्यास राउरकेला आदि भी निरन्तर सम्मिलित रहे। अन्य प्रतिष्ठित एवं विशिष्ट अतिथियों में जिन्होंने उत्सव में भाग लेकर कार्यक्रम की शोभा बढ़ाई उनमें प्रसिद्ध दानवीर महर्षि के अनन्य अनुयायी, गो एवं गुरुकुल के सहायक श्री दीनदयाल गुप्त, 'समाज्ञा' पत्र के सम्पादक श्री अनिल राय, आर्ष साहित्य ट्रस्ट दिल्ली के प्रधान श्री धर्मपाल आर्य, श्री सत्य नारायण देवरालिया आदि के नाम उल्लेखनीय हैं।

27 दिसम्बर को वैदिक विद्वान् पं. आत्मानन्द शास्त्री का सार्वजनिक अभिनन्दन किया गया। उन्हें शॉल, स्मृति चिन्ह तथा प्रशस्ति पत्र प्रदान करके उनके दीर्घायुष्य की कामना की गई। अभिनन्दन के उपरान्त ऋग्वेदादिभाष्य भूमिका तथा सत्यार्थ प्रकाश का विमोचन आर्ष साहित्य ट्रस्ट दिल्ली के प्रधान श्री धर्मपाल आर्य ने किया। उनके साथ आर्य समाज कलकत्ता के प्रधान श्री मनीराम आर्य, मंत्री श्री मदन सेठ, श्री योगराज उपाध्याय, आर्य प्रतिनिधि सभा बंगाल के मंत्री श्री दीपक आर्य, वैदिक विद्वान् डॉ. ज्वलन्त कुमार शास्त्री एवं स्वामी आर्यवेश जी ने भी विमोचन कार्यक्रम में भाग लिया। श्री धर्मपाल आर्य ने आर्य साहित्य के प्रचार–प्रसार को भविष्य में भी योगदान करते रहने का आश्वासन देकर आर्य समाज के पदाधिकारियों का उत्साह बढ़ाया। आर्य समाज कलकत्ता के पदाधिकारियों ने श्री धर्मपाल आर्य का स्मृति चिन्ह एवं शॉल देकर स्वागत किया तथा उनका धन्यवाद किया।

28 दिसम्बर को गोरक्षा सम्मेलन की अध्यक्षता श्री दीनदयाल गुप्ता जी ने की तथा कर्नाटक से पधारे स्वामी दयानन्द सरस्वती, स्वामी श्रद्धानन्द जी, डॉ. ज्वलन्त कुमार शास्त्री व स्वामी आर्यवेश जी ने विचार प्रकट किये।

इस अवसर पर स्वामी आर्यवेश जी ने एक महत्त्वपूर्ण प्रस्ताव प्रस्तुत करते हुए कहा कि गोवंश के निरन्तर हो रहे अपमान एवं उपेक्षा के परिणामस्वरूप देश में गोवंश घटता जा रहा है। लाखों गाय, बछड़े व बैल प्रतिदिन बूचड़खानों में काटे जा रहे हैं और गोमांस तथा गौ के रक्त का चन्द विदेशी मुद्रा के लालच में निर्यात किया जा रहा है जो भारतीय संस्कृति एवं गोमाता पर करारी चोट है। ऐसी स्थिति में गोवंश की रक्षा करना प्रत्येक भारतवासी का परम कर्त्तव्य है। स्वामी आर्यवेश जी ने कहा कि सर्वोच्च न्यायालय द्वारा दिये गये निर्णय के अनुसार गौ जैसे उपयोगी पशुओं की हत्या नहीं की जा सकती। इसके बावजूद गोहत्या जारी रहना तथा सरकार द्वारा गोमांस निर्यात करना न्यायालय की अवमानना भी है और गोमाता पर अत्याचार भी है। स्वामी जी ने सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा की ओर से घोषणा की कि बहुत शीघ्र सभा के तत्वावधान में गोरक्षा आन्दोलन प्रारम्भ किया जायेगा जिसमें सम्पूर्ण आर्य जगत के अतिरिक्त देश के उन सभी संगठनों तथा गोप्रेमी जनता को सम्मिलित किया जायेगा जो भारत माता के माथे से गोहत्या के कलंक को मिटाना चाहते हैं। स्वामी जी ने इस प्रस्ताव को कलकत्ता घोषणा पत्र का नाम दिया और आर्य समाज कलकत्ता को यह श्रेय प्रदान किया कि ऐसे महत्त्वपूर्ण कार्यक्रम का निर्णय आर्य समाज कलकत्ता के वार्षिकोत्सव के अवसर पर लिया जा रहा है। इसके लिए आर्य समाज कलकत्ता के सभी पदाधिकारी बधाई के पात्र हैं। स्वामी जी ने देश के सभी सम्प्रदायों एवं समाजसेवी संगठनों से अपील की कि गोरक्षा के मुद्दे पर सभी मिलकर यदि

शेष पृष्ठ 5 पर

सम्पादक - प्रो. विट्ठलराव आर्य

सपने तो सपने होते हैं

– अशोक आर्य

हर व्यक्ति एक तर्काधारित समाज की बात करता है। हमारा संविधान भी अपेक्षा करता है कि समाज में ऐसा वातावरण सृजित हो जिसमें विवेक तथा तर्क की प्रतिष्ठा हो और अंधविश्वासों का समूल नाश। ऐसा भी प्रायः माना जाता है कि शिक्षा के प्रसार के साथ–साथ उक्त उद्देश्य की प्राप्ति संभव है। परन्तु बड़े ही आश्चर्य की बात है कि शिक्षा का प्रसार भी अंधविश्वास को विनष्ट नहीं कर पा रहा है, बल्कि स्थिति यह बनती जा रही है कि 'मर्ज बढ़ता गया ज्यों ज्यों दवा की'। आज शिक्षितों की संख्या बढ़ती जा रही है इसमें कोई संदेह नहीं है पर आश्चर्य यह है कि अंधविश्वास भी अपने चरम पर पहुँच गया है। सोशल मीडिया ने तो इसे ऐसी ग़ति दे दी है कि इस पर लगाम लगाना भी कठिन हो गया है। पहले संचार के सीमित अथवा व्ययसाध्य साधन होने के कारण समाचार देरी से तथा सीमित दायरे में पहुँचते थे पर अब तो कोई सीमा ही नहीं है। गणेश जी ने दूध पिया यह तो पाठकों को याद ही होगा, अभी कुछ दिन पूर्व बाल–कृष्ण की मूर्ति ने भी दूध पिया और मिनटों के अन्तराल में ही उस घर में लोग पहुँचने लगे। अंधविश्वासों के नए–नए तरीके भी आविष्कृत होने लगे हैं, जैसे टैरोकार्ड, जानवरों यथा मछली, आक्टोपस द्वारा की जाने वाली भविष्यवाणियों की नयी अथवा तोते द्वारा की जाने वाली पुरानी कहानी।

हमने अपने लेखों द्वारा इन सबकी ओर यथाशक्य पाठकों का ध्यान आकर्षित किया है। अभी तीन चार दिन पूर्व नवलखा महल से घर लौट रहा था। एफ.एम पर एक कार्यक्रम आ रहा था जिसमें कोई स्वप्न विशेषज्ञ लोगों को उनके द्वारा देखे गए स्वप्नों के आधार पर उनका भविष्य बता रहीं थीं। अगर इसे स्वप्नवाणी नाम दें तो कह सकते हैं कि यह क्षेत्र अत्यन्त पुराना तो है पर कम प्रचिलित है। एक सज्जन अपना स्वप्न बता रहे थे कि वे प्रायः एक स्वप्न देखते हैं कि जब वे दुकान पहुँचते हैं तो शटर बन्द मिलता है। स्वप्न विशेषज्ञ ने सलाह दी कि उनके निकट सम्बन्धी मित्र आदि उनके विरुद्ध षड्यंत्र रच रहे हैं वे सावधान रहें। अब बताइये स्वप्न से इस निष्कर्ष का क्या सम्बन्ध है? पहले से परेशान वह वहमी व्यक्ति अब बहिन, पत्नी व मित्रों को शक की नजर से देख–देख कर हलकान हो रहा होगा तथा अपने पारिवारिक एवं सामाजिक जीवन में अनेक उलझनें उत्पन्न कर रहा होगा। परन्तु यह भी है कि समस्या और निष्कर्षों में कोई तार्किकता हो तो फिर वह अंधविश्वास ही कहाँ रहेगा। पाठकगणों के विचार के लिए कतिपय स्वप्नवाणियाँ यहाँ हम दे रहे हैं।

1. यदि आप स्वयं को जलती हुई आग अथवा कोयलों पर देखें तो आपको शत्रुओं द्वारा हानि हो सकती है।

2. सपने में सापों का काटने का मतलब आपको धन की प्राप्ति होगी।

3. सपने में आपने देखा कि आपके हाथ में धागा बँधा है तो आप पर कोई संकट आ सकता है।

4. यदि आपके हाथ में तलवार अथवा कोई अन्य अस्त्र है, तो आपका किसी से झगड़ा हो सकता है।

5. यदि आप–अपने हाथ में सोना देखें तो जो कार्य आप कर रहे हैं, उसे छोड़ देना चाहिए क्योंकि उसमें आपको असफलता ही हाथ लगेगी।

6. यदि आप सपनों में घोड़े देखते हैं, तो आपके लिए यह शुभ है परन्तु घोड़े काले हैं तो कोई संकट आने वाला है।

7. यदि आप सपने में बाज पक्षी को पकड़ लेते हैं, तो आप जो कार्य करने की सोच रहे हैं, उसमें अवश्य सफल होंगे।

वस्तुतः स्वप्न है क्या? हम जो कुछ भी देखते–सुनते हैं अथवा महसूस करते हैं वह हमारे मस्तिष्क में सुरक्षित हो जाता है। इनमें से ही कोई, जब निद्रा अत्यन्त प्रगाढ़ नहीं हुयी होती है अपने को प्रकाशित कर देता है, पर इनमें क्रमबद्धता अथवा व्यवस्था हो ऐसा आवश्यक नहीं। अतएव तारतम्य न बन पाने से प्रायः प्रातःकाल तक हम भूल जाते हैं। कई बार ऐसा होता है कि हम किसी अभिलषित कार्य को तो कर लेते हैं परन्तु लोकलाज अथवा अन्य कारणों से अन्य को दबा देते हैं यह दबी हुयी अभिलाषाएँ स्वप्न में यथावत् अथवा परिवर्तित रूप में प्रकट हो जातीं हैं। स्वप्न से व्यक्ति की मनोदशा का अनुमान लगाने की बात तो फिर भी समझी जा सकती है परन्तु 'स्वप्न में सांप काटे तो धन मिलेगा' जैसे कथन नितान्त अंधविश्वास के ही प्रतीक हैं। ऊपर वाले उदाहरण में व्यक्ति अपने व्यापार को लेकर चिन्ता तथा आशंकाओं से ग्रसित है यह तो समझा जा सकता है पर उसके मित्र षड्यंत्र करने जा रहे हैं ऐसे कथन का कोई वैज्ञानिक आधार नहीं है।

यद्यपि स्वप्न की चर्चा प्राचीन समय में भी मिलती है। कहा जाता है कि त्रिजटा राक्षसी ने लंका के जलने का स्वप्न देखा। पर इसमें आश्चर्यजनक क्या है? लंका की स्थिति, श्रीराम तथा किष्किंधा राज्य की सम्मिलित ताकत, रावण की मनोदशा तथा उसके अनैतिक कृत्य किसी भी संवेदन तथा विचारशील को वैसा ही स्वप्न दिखाने में सक्षम थे। त्रिजटा का स्वप्न सर्वथा स्वाभाविक था। पर ऊपर वर्णित स्वप्नों को आधार बना जो भविष्यवाणियाँ की गयीं हैं वे नितान्त अंधविश्वास हैं।

स्वप्न पर विद्वान् प्राचीन समय से विचार करते रहे हैं, यूनान के विचारक हिप्पोक्रेटस की तो अत्यन्त दिलचस्प सोच है। उनका मानना है कि निद्रा के समय आत्मा शरीर से अलग होकर विचरण करती है और ऐसे में जो देखती है या सुनती है, वही स्वप्न है। अरस्तू ने अपनी पुस्तक 'पशुओं के इतिहास' में लिखा है कि केवल मनुष्य ही नहीं, अपितु भेड़, बकरियाँ, गाय, कुत्ते, घोड़े इत्यादि पशु भी स्वप्न देखते हैं। प्राचीन भारतीय दार्शनिकों के अनुसार, आत्मा चौरासी लाख योनियों में जन्म लेने और भ्रमण करने के बाद मनुष्य योनि प्राप्त करती है। स्वप्न के माध्यम से वह विभिन्न योनियों में अर्जित अनुभवों का पुनः स्मरण करती है। फ्रायड आदि अनेक मनोवैज्ञानिक इन्हें दमित अभिलाषाओं का प्रकाशन मानते हैं।

बेबीलोनिया के महाकाव्य 'एपिक आफ गिलगमेश' में एक विवरण मिलता है। गिलगमेश ने सपना देखा कि 'एक कुल्हाड़ा आसमान से गिरा'। लोग प्रशंसा और पूजा में कुल्हाड़े के चारों ओर एकत्र हो गए। गिलगमेश ने अपनी माँ के सामने कुल्हाड़ा फेंक दिया और फिर उसे पत्नी की तरह गले से लगा लिया।' उसकी माँ निनसुन ने सपने की व्याख्या की। उन्होंने कहा कि शीघ्र ही कोई शक्तिशाली प्रकट होगा। गिलगमेश उसके साथ संघर्ष करेगा और उसे पराजित करने की कोशिश करेगा, लेकिन वह सफल नहीं होगा। अंततः वे करीबी दोस्त बन जाएँगे। उन्होंने जोड़ा, 'तुमने उसे एक पत्नी की तरह गले लगाया था, इसका मतलब यह है कि वह तुम्हें कभी नहीं छोड़ेगा'। इस हल में अनुमान भाग ज्यादा है फिर भी हथौड़े को पौरुष का प्रतीक तथा पत्नी को सर्व सहयोगिनी मान कुछ तर्काधारित बनाने की कोशिश की गयी है।

एक ऐसे ही स्वप्न का जिक्र मिलता है– एक व्यक्ति कुछ समय से बीमार था और उसका इलाज चल रहा था। एक दिन उसने स्वप्न देखा कि एक चिड़िया उसके घर में फंस गई है और बाहर निकलने के लिए पंख फड़फड़ा रही है। लेकिन जैसे ही वह चिड़िया घर से बाहर निकली, नीचे गिर गयी। उस व्यक्ति ने देखा कि वह चिड़िया इतनी कमजोर थी कि वह उड़ नहीं पा रही थी। इस स्वप्न का मतलब था कि वह व्यक्ति अपनी बीमारी से बहुत परेशान हो गया था व बाहर जाना चाहता था। लेकिन वह बहुत कमजोर भी हो गया था। उसे पूर्णतया से ठीक होने के लिए अभी और कुछ दिन चिकित्सा की आवश्यकता थी। यह तार्किक निष्कर्ष था।

इसी प्रकार सिकन्दर के भी एक सपने का जिक्र मिलता है। टीरियनों के खिलाफ युद्ध करते समय सिकन्दर ने सपना देखा कि एक ऐयाश (सैटर) उनकी ढाल पर नृत्य कर रहा था। इस सपने की इस प्रकार व्याख्या की गई थी– सैटर= सा टिरोस ('सूर तेरा हो जाएगा'), यह भविष्यवाणी करते हुए कि अलेक्जेंडर विजयी होगा। उपरोक्त दोनों प्रकरणों में फिर भी कुछ दिमाग लगाया गया है, परन्तु जिन भविष्यवाणियों का दिग्दर्शन हमने पहले किया है वहाँ ऐसा कुछ भी नहीं है।

स्वप्न के बाबत एक अंतर्जालीय पत्र में एक अनुसंधान का हवाला देकर लिखा है–

एक रिसर्च में सामने आया है कि जब हम जागते हुए किसी चीज को देखते हैं और उस चीज का अवलोकन करते हैं तो वो हमारे अन्तर्मन में बैठ जाती है और अन्तर्मन में इस बात की पैठ ऐसी हो जाती है कि हमें वो चीजें सपने में दिखाई देने लगती है। मूल बात यह है कि जो चीज हम देखते हैं, जो चीज हम सुनते हैं, जो चीज हम समझते हैं या जो चीज हम स्पर्श करते हैं सपनों का सम्बन्ध मात्र उन्हीं चीजों से होता है। यह मूल रूप से व्यक्ति की मानसिक दशा पर निर्भर करता है किस वक्त कौन–सा सपना आएगा कैसा आएगा और उसका क्या स्वरूप होगा। जैसा कि एक छोटे बच्चे को सपना आएगा तो वो अपने आस–पास उन्हीं चीजों या लोगों को देखेगा जिन्हें अभी तक वो अपने जीवन में देख चुका है।

कहा गया है कि जन्मांध स्वप्न नहीं देखता। कुछ दार्शनिकों का मानना है 7 वर्ष में दृष्टि खोने वाला बच्चा स्वप्न देखता है। पूर्वजन्म की स्मृतियों के आधार पर गर्भ में पल रहा बच्चा भी सपने देखता है, ऐसा माना जाता है।

उक्त रिसर्च में आगे कहा है कि अंधे व्यक्ति के सपने में चित्र नहीं होते बल्कि सिर्फ आवाज होती है और एक गूंगे व्यक्ति के सपने में आवाज नहीं होती और उसे सब कुछ वैसा ही दिखता है जैसा कि जीवन वो जीता है। यानी कि ये बात साफ तौर पर कही जा सकती है कि सपनों का सीधा सम्बन्ध हमारी दिनचर्या से होता है और जैसा जीवन हम खुली आँखों से जीते है वैसे ही सपने हमें बंद आँखों से दिखाई देते हैं।

हमें कैसे सपने आते हैं ये इस बात पर निर्भर करता है कि हम किस चीज के बारे में ज्यादा सोच रहे होते हैं। यानी कि अगर आपकी परीक्षाएँ पास आ रही हैं तो आप पूरा दिन उसी के बारे में सोचेंगे और आपको कुछ ही दिनों में वही सपना आएगा या फिर उससे मिलता जुलता लेकिन यह कहा जा सकता है कि सपना वही आएगा जो बातें हमारे दिमाग में गड़ी यानी कि अच्छे से बैठी होती हैं। इसलिए कहा है आप अपने सपनों में क्या करते हैं इससे अपने चरित्र को आँक सकते हैं। Judge your natural character by what you do in your dreams. (Ralph w. emerson)

आज तक सपनों के बारे में लगातार हो रही खोजों से सिर्फ यही तथ्य सामने आया है कि कहीं ना कहीं हम उन चीजों को जी चुके होते हैं या महसूस कर चुके हैं। सपनों के बारे में एक और बात अध्ययन में सामने आई है और वो है कि सपने आमतौर पर एक इंसान उसकी अपनी भाषा में देखता है जिसे वो पूरा दिन बोलता है, यानी की अंग्रेजी बोलने वाला इंसान अंग्रेजी में सपने देखेगा ।

अतः स्पष्ट है कि सपनों के आधार पर भविष्य कथन मात्र एक व्यापार है जिसमें तर्क तथा बुद्धि पूर्णतः नदारद है।

आप एक बात और विचार करें और जिसे प्रायः हम अपने ऐसे विषय से सम्बन्धित प्रत्येक लेख में उठाते रहे हैं कि जब भविष्य कथन कर ही दिया जाता है तो फिर उसका उपचार क्योंकर हो सकता है? हर प्रक्रिया में भविष्य की आपके मनोनुकूल उपचार–व्यवस्था का होना इसे ठगी का व्यापार सिद्ध करता है। स्वप्नवाणियों के व्यापार में भी इनकी उपस्थिति इस पूरे धंधे को ठगी के अंतर्गत परिभाषित करती है। इनमें से नीचे कुछ उपचार दिए हैं–

1. यदि स्वप्न 4 बजे के बाद देखा गया है और स्वप्न बुरा है, तो प्रातः उठकर बिना किसी से कुछ बोले तुलसी के पौधे से पूरा स्वप्न कह डालें। कोई दुष्परिणाम नहीं होगा। स्नान के बाद 'ऊँ नमः शिवाय' का 108 बार जप करें।

2. हनुमान जी सब प्रकार का अनिष्ट दूर करने वाले हैं। बुरे स्वप्न का अनिष्ट दूर करने के लिए सुन्दरकांड, बजरंग बाण, संकटमोचन स्तोत्र अथवा हनुमान चालीसा का पाठ भी सायंकाल के समय किया जा सकता है।

3. यदि स्वप्न बहुत बुरा है और आपके घर में तुलसी का पौधा नहीं है, तो सुबह उठकर सफेद कागज पर स्वप्न को लिखें फिर उसे जला दें। राख नाली में पानी डाल कर बहा दें। फिर स्नान करके एक माला शिव के मंत्र 'ऊँ नमः शिवाय' का जप करें। दुष्प्रभाव नष्ट हो जाएगा।

स्पष्ट है कि ये उपचार सार्वभौमिक नहीं हैं। तुलसी, हनुमान जी, शिवजी के अभाव में कोई विदेशी स्वप्नोक्त भविष्य से न बच पायेगा। ऐसी स्थिति में इस समस्त गोरखधंधे पर हँसी क्यों न आए?

हम तो अन्त में इतना कहेंगे कि गहरी नींद के अभाव में स्वप्न आते हैं अतः उपयुक्त दिनचर्या का पालन ही अपेक्षित है। जो व्यक्ति अनावश्यक इच्छाओं, चंचल भावनाओं, उच्च आकांक्षाओं और भूत–भविष्य की चिन्ता से अपने को मुक्त रखते हैं, वही स्वप्न रहित गहरी निद्रा ले पाते हैं। फिर उन्हें तथाकथित स्वप्न व्याख्याताओं की कोई आवश्यकता ही नहीं रहेगी।

सपनों की गम्भीर व्याख्या के पीछे भागना व्यर्थ है क्योंकि 'सपने तो सपने होते हैं।

– कार्यकारी अध्यक्ष,
श्रीमद् दयानन्द सत्यार्थ प्रकाश न्यास
नवलखा महल, गुलाब बाग, उदयपुर

भारतवर्ष की बदहाली के मूल कारण

– कृष्ण चन्द्र गर्ग

1. न्याय व्यवस्था– देश में बढ़ रहे अपराध और भ्रष्टाचार के लिए हमारी न्याय व्यवस्था विशेष रूप से जिम्मेदार है। अपराधी को जो दण्ड चार–छः महीनों में मिल जाना चाहिए उसमें पन्द्रह–बीस वर्ष लग जाते हैं। राम रहीम के खिलाफ बलात्कार की शिकायत सन् 2002 में की गई थी। उसे दण्ड 2017 में मिला। बीच के पन्द्रह साल में उसने जो अपराध किए उनके लिए कौन जिम्मेदार है? इस देरी के कारण से लोगों में न्यायालयों का और दण्ड का भय नहीं रहा। माना भी जाता है – Justice delayed is justice denied. अर्थात् यदि न्याय देने में देरी होती है तो वह न्याय नहीं रहता।

इतना ही नहीं, हमारी न्याय व्यवस्था बहुत महंगी, बहुत पेचीदा और भ्रष्ट है। हमारे देश में हजारों करोड़ रुपए लूटने वाले बड़े अपराधी नेताओं को शायद ही कभी सजा होती है और उनकी लूटी हुई सम्पत्ति शायद ही कभी जब्त होती है। दूसरी तरफ– गरीब आदमी को छोटे से अपराध में ही लम्बे समय तक जेल में रहना पड़ता है। बहुत से गरीब लोग तो जमानत के अभाव में बिना अपराध ही जेलों में पड़े सड़ते रहते हैं। देश के नागरिकों के खिलाफ यह बड़ा अपराध है जो सरकारी तन्त्र के द्वारा किया जाता है।

एक और बड़ी विडम्बना– नीचे की अदालत कोई फैसला देती है और ऊपरी अदालत उस फैसले को पलट देती है। तो नीचे की अदालत को गलत फैसला देने की सजा क्या है, शायद कोई नहीं। न्यायाधीश अपने फैसलों के लिए उत्तरदायी क्यों नहीं?

2. जनसंख्या वृद्धि– देश में जनसंख्या तेजी से बढ़ रही है। इस कारण से कोई भी आर्थिक सुधार सफल नहीं हो पा रहा। देश में जमीन तथा अन्य साधन सीमित हैं। बढ़ती आबादी में जरूरत की वस्तुएँ सभी को उपलब्ध करवाना सम्भव न होगा। अब भी देश में बीस करोड़ लोगों को पेट भर खाना नहीं मिलता, वे भूखे पेट सोते हैं। इससे भी अधिक लोग मकानों के अभाव में झुग्गी–झोंपड़ियों में रहने को मजबूर हैं। अतः जनसंख्या पर नियन्त्रण करने की परम आवश्यकता है।

जनसंख्या वृद्धि के दो कारण हैं

पहला कारण– शिक्षा का अभाव। सांख्यिकी (Statistics) के हिसाब से जो लोग जितने ज्यादा पढ़े लिखे हैं उनके बच्चे उतने ही कम हैं और जो लोग कम पढ़े हैं या अनपढ़ हैं उनके बच्चे ज्यादा हैं। खेद है कि स्वतन्त्र भारत की सरकारों ने 70 वर्षों में देश को शिक्षित करने का कोई गंभीर प्रयास नहीं किया।

दूसरा कारण– मुसलमान मानते हैं कि उनके मजहब में परिवार नियोजन वर्जित है अर्थात् बच्चों की उत्पत्ति को रोकना इस्लाम के खिलाफ है। मुसलमानों का परिवार नियोजन को न मानने का एक और बड़ा कारण यह है कि वे मुसमलानों की जनसंख्या इतनी अधिक बढ़ाना चाहते हैं जिससे सारे संसार में इस्लाम का और शरीया का शासन लाया जा सके। भारत की सरकारें इस विषय पर मौन हैं। सरकारों का इस विषय पर मौन रहना देश के लिए घातक है। सरकार की जिम्मेदारी है कि वह देश हित में जनसंख्या नियन्त्रण पर दृढ़ता से अमल करवाए।

3. आरक्षण– हमारे देश की आरक्षण की व्यवस्था न न्यायसंगत है और न ही राष्ट्रहित में है। यह सरकारों की अयोग्यताओं और विफलताओं के ऊपर पर्दा डालने का प्रयास मात्र है। कुछ थोड़े से लोगों को सरकारी सुख–सुविधाएँ दे देना, और शेष बहुत से योग्य व्यक्तियों को उनके हाल पर छोड़ देना– यह जनता में फूट डालकर शासन करने की बात तो हो सकती है, राष्ट्र निर्माण की कतई नहीं। आरक्षण नीति से योग्यता निरुत्साहित हुई है और अयोग्यता को बढ़ावा मिला है, देश के नौजवानों में असन्तोष और निराशा पैदा हुई है। इससे देश में द्वेष बढ़ा है, गुणवत्ता और कार्य कुशलता घटी है, राष्ट्र कमजोर हुआ है।

रोटी, कपड़ा, मकान, शिक्षा, चिकित्सा, न्याय, सुरक्षा सभी मनुष्यों की मूलभूत आवश्यकताएँ हैं। सरकारों की जिम्मेदारी बनती है कि वे सभी को इन आवश्यकताओं की पूर्ति के अवसर प्रदान करें।

4. अनेकता में एकता कैसी?– भाषा के आधार पर अलग–अलग प्रान्त, मजहब के आधार पर अलग–अलग कानून, जातपात के आधार पर अलग–अलग सुविधाएँ, अल्पसंख्यक/बहुसंख्यक के नाम पर बंटवारा– ये अलग–अलग व्यवस्थाएँ देश को जोड़ नहीं रहीं, अपितु तोड़ रही हैं। हमारे प्रधानमन्त्री नरेन्द्र मोदी जी बारम्बार बड़े जोर शोर से कहते हैं कि 'अनेकता में एकता' हमारी बड़ी ताकत है। मुसलमानों का देश के लिए एक से कानून (Uniform Civil Code) न बनने देना– क्या यह देश की बड़ी ताकत है? आरक्षण पर योग्य नौजवानों का आक्रोश– क्या यह देश की बड़ी ताकत है? क्या धारा 370 देश की बड़ी ताकत है? अयोध्या में राम मन्दिर पर हिन्दुओं और मुसलमानों में गतिरोध क्या देश की बड़ी ताकत है?आदि–आदि। व्यक्तिगत विषयों में अनेकता रहती है, परन्तु सार्वजनिक और राष्ट्रीय विषयों में एकता का होना परम आवश्यक है जैसे सड़क पर बाईं ओर वाहन चलाने का कानून सबके लिए एक समान है। अनेकता से तो देश में विघटन, विखराव और टकराव ही पैदा होते हैं।

और भी, एकता तो समता में होती है, विषमता में नहीं। सधवा और विधवा में मित्रता नहीं होती, अमीर और गरीब की दोस्ती नहीं होती, भेड़ और भेड़िए की दोस्ती नहीं होती। दोस्ती और एकता तो सधवा की सधवा से, विधवा की विधवा से, अमीर की अमीर से, गरीब की गरीब से, भेड़ की भेड़ से और भेड़िए की भेड़िए से ही होती है। क्या गोभक्त और गोघातक में एकता सम्भव है?

5. साम्प्रदायिकता– भारतवर्ष में बड़ा झूम–झूम कर गाया जाता है– 'मजहब नहीं सिखाता आपस में बैर रखना' और इसका अर्थ लगाया जाता है कि कोई भी मजहब किसी भी दूसरे मजहब से वैर करना नहीं सिखाता। यह बात उतनी ही गलत, झूठी और छलपूर्ण है जितनी कि ज़हर की पुड़िया को संजीवनी बता कर खिला देना।

इतिहास गवाह है कि संसार में जितनी मार–काट, लूट–पाट, अत्याचार विभिन्न मजहबों के कारण हुए हैं और हो रहे हैं उतने और किसी भी कारण से नहीं हुए। अलग मजहब के कारण ही सन् 1939 से 1945 के बीच जर्मनी के डिक्टेटर हिटलर ने साठ लाख यहूदियों को मौत के घाट उतरवा दिया था। विभिन्न मजहबों के कारण ही सन् 1947 में भारत विभाजन के समय छः लाख निर्दोष लोग मारे गए थे। अलग मजहब के कारण ही सन् 1990 में कश्मीर से चार लाख हिन्दुओं को अपनी जान बचाकर भागना पड़ा था। अलग मजहब के कारण ही सन् 1978 से 1995 के बीच पंजाब में हिन्दुओं को बसों से, गाड़ियों से और घरों से निकालकर गोलियों का निशाना बनाया गया था तथा बड़ी संख्या में हिन्दुओं को पंजाब छोड़ना पड़ा था। अलग मजहब के कारण ही पाकिस्तान में हिन्दू 15 प्रतिशत से घट कर 2 प्रतिशत रह गए हैं और बंगलादेश में हिन्दू 30 प्रतिशत से घट कर 8 प्रतिशत रह गए हैं। फिर भी सच्चाई से मुँह मोड़ लेना ऐसे है जैसे बिल्ली को देखके कबूतर आँखें मीच ले और सोच ले कि बिल्ली उसे नहीं खाएगी।

6. सर्वधर्म समभाव– अर्थात् सभी मजहबों के प्रति एक जैसी भावना रखो। यह एक गलत उपदेश है। एक मुसलमान हिन्दुमत के प्रति इस्लाम जैसी भावना कैसे रख सकता है। वह तो हिन्दू को काफिर मानता है और काफिर के प्रति उनके मजहब में दो ही विकल्प है– उसे मुसलमान बना लेना या उसका कत्ल कर देना। एक गोभक्त गोघातक के प्रति सद्भावना कैसे रख सकता है। इसलिए यह एक कपटपूर्ण कसरत है जिसे सिर्फ हिन्दू ही करते हैं। दुनिया में और किसी मजहब का आदमी ऐसी मूर्खतापूर्ण बात नहीं करता।

7. रिश्वत सम्बन्धी कानून– देश में रिश्वत देना और लेना दोनों अपराध माने जाते हैं। इसी व्यवस्था के कारण लगभग हर छोटे बड़े दफ्तर में रिश्वत के बिना कोई फाईल आगे नहीं सरकती और लोगों का कोई काम नहीं किया जाता। आम लोगों को दफ्तरों से जो काम पड़ते हैं वे जायज़ ही होते हैं। नाजायज़ काम तो शायद ही कभी किसी का हो। इसलिए रिश्वत कोई भी देना नहीं चाहता। पर दफ्तर के मुलाजिमों द्वारा लोगों को नाजायज तंग किया जाता है, फालतू के चक्कर कटवाए जाते हैं और रिश्वत की माँग की जाती है। लोगों को बेबस होकर रिश्वत देनी पड़ती है।

यदि सरकार सचमुच रिश्वत का धंधा समाप्त करना चाहती है और लोगों का जीवन सरल बनाना चाहती है तो उसे कानून को बदलना होगा। कानून में रिश्वत लेना अपराध हो, देना नहीं।

8. नौकरी की सुरक्षा (Security of Service) – इस व्यवस्था के चलते किसी भी सरकारी नौकर को नौकरी से हटाना बेहद कठिन काम है। इस कारण से ही सरकारी नौकर जनता की परवाह नहीं करते, काम भी अपनी मर्जी से करते हैं या नहीं करते, जनता को तंग करके उनसे घूस लेते हैं। इसीलिए सरकारी नौकरी पाने के लिए मोटी–मोटी धन राशियाँ रिश्वत के तौर पर दी और ली जाती हैं। अतः यह व्यवस्था भ्रष्टाचार उत्पादक है, अकुशलता को बढ़ावा देने वाली है और जनता विरोधी है।

इसी कारण से सरकार दफ्तरों में काम के लिए लोगों को एड़हाक अर्थात् कच्चे तौर पर रखती है। ऐसे मुलाजिमों से काम अधिक लेती है, तनख्वाह पक्के मुलाजिमों के मुकाबले बहुत कम देती है और जब चाहें उन्हें निकाल सकती है। यह अन्याय और दुर्व्यवस्था है। इसकी जड़ में भी नौकरी की सुरक्षा ही है।

9. सरकारी अफसरों के पास अधिकार– सरकारी अफसरों के पास बहुत अधिक अधिकार हैं। जनता के सही काम को गलत और गलत को सही ठहराना उनकी मर्जी पर निर्भर करता है। ऐसे अफसरों पर कोई कार्रवाई नहीं होती। जज चाहे जितना मर्जी गलत फैसला दे दें उन पर कोई कार्रवाई नहीं होती। राष्ट्र के पतन का यह एक बड़ा कारण है। इस प्रकार से मार जनता पर ही पड़ती है।

10. सरकारी मुलाजिमों का निलम्बन (Suspension) – घोटाले आदि के आरोप में सरकारी मुलाजिम को निलम्बित (Suspend) कर दिया जाता है। फिर सारी सरकारी मशीनरी उसे बचाने में लग जाती है। कुछ समय एनक्वारी का ड्रामा कर उसे नौकरी पर फिर बहाल कर दिया जाता है। किसी बिरले को ही सजा दी जाती है। यह नाटक भी खूब चल रहा है देश में।

11. सरकारी अफसरों की बदलियाँ– सरकारी अफसरों को सरकार अपनी मर्जी से एक स्थान से दूसरे स्थान पर बदलती रहती है। यह एक बड़ा भ्रष्टाचार और घोटालों का धन्धा है। एक सरकारी अफसर ने एक स्थान पर गलत काम किए, उसकी किसी दूसरे स्थान पर बदली कर दी जाती है। यह सजा नहीं, इनाम है क्योंकि नए स्थान पर वह स्वच्छ (Clean) माना जाता है। दूसरी बात – कुछ अफसर अपनी बदली करवाने के लिए या बदली रुकवाने के लिए रिश्वत देते हैं। कुछ बदलियाँ तो की ही इसलिए जाती हैं कि अफसर अपनी बदली रुकवाने के लिए रिश्वत देंगे। वाह री मेरी सरकार की व्यवस्था!

12. शासकों को सुविधाएँ– देश में विधायकों, सांसदों, मन्त्रियों और अफसरों को सरकार की तरफ से तनख्वाह, कार, कोठी, नौकर, ड्राईवर तथा यात्रा, चिकित्सा भत्ते आदि सुविधाएँ इतनी अधिक दी जाती हैं कि वे अपने आपको आम जनता से बहुत अलग तथा ऊपर मानने लगते हैं। यह प्रजातन्त्र के नाम पर लूटतंत्र है और जनता से छल है। वास्तविक प्रजातन्त्र में विधायक, सांसद, मन्त्री, अफसर आदि जनता के सेवक होते हैं, मालिक नहीं।

13. हमारी आयकर प्रणाली– यह विषमता को बढ़ाने वाली और अमीरों के पक्ष में है। इसका कारण है– परिवार के सभी सदस्यों की आय पर आयकर से अलग–अलग छूट। उदाहरण– एक अमीर परिवार में पति, पत्नी और

शेष पृष्ठ 6 पर

विशाल आर्य सम्मेलन एवं वेद प्रचार सत्संग ग्राम चहड़कला, जिला–भिवानी, हरियाणा में

सार्वदेशिक सभा के प्रधान स्वामी आर्यवेश जी का आह्वान

गोहत्या, गोमांस निर्यात एवं शराबखोरी के विरुद्ध आर्य समाज चलायेगा राष्ट्रीय अभियान

गोवंश प्रेमी जनता तन–मन–धन से करे सहयोग

गत 2 जनवरी, 2020 ग्राम–चहड़कला, जिला–भिवानी, हरियाणा में विशाल आर्य सम्मेलन एवं वेद प्रचार सत्संग का भव्य आयोजन किया गया। जिसमें क्षेत्र के दर्जनों गांव से प्रतिष्ठित लोगों ने भारी संख्या में भाग लिया। सम्मेलन में सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान स्वामी आर्यवेश जी के अतिरिक्त बेटी बचाओ अभियान की अध्यक्षा एवं संयोजक बहन पूनम आर्या एवं प्रवेश आर्या, विदुशी आर्य भजनोपदेशिका कल्याणी आर्या, सेवानिवृत्त एस.डी.एम. श्री इन्द्र सिंह आर्य, सार्वदेशिक आर्य युवक परिषद् हरियाणा के अध्यक्ष एवं मिशन आर्यावर्त यू–ट्यूब के निदेशक ब्र. दीक्षेन्द्र आर्य, प्रसिद्ध आर्य भजनोपदेशक श्री रामरख आर्य आदि ने जनता को सम्बोधित किया।

इस भव्य आयोजन की सूत्रधार बहन मुकेश आर्या, सह–निदेशक मिशन आर्यावर्त यू–ट्यूब चैनल एवं सचिव बेटी बचाओ अभियान हरियाणा के पुरुषार्थ एवं परिश्रम से कार्यक्रम अत्यन्त प्रभावशाली रहा। सम्मेलन में विशेष रूप से स्वामी इन्द्रवेश विद्यापीठ आश्रम टिटौली के स्वामी ब्रह्मानन्द सरस्वती, डॉ. भूपसिंह आर्य – भिवानी, श्री बजरंग लाल आर्य कोषाध्यक्ष आर्य समाज नागोरी गेट हिसार, श्री दलबीर सिंह आर्य प्रधान आर्य युवक परिषद् जिला हिसार, श्री महेन्द्र सिंह आर्य मंत्री आर्य युवक परिषद् जिला हिसार, श्री सीताराम आर्य अध्यक्ष केन्द्रीय आर्य युवक परिषद् हिसार, श्री आर्य जयवीर उपाध्यक्ष आर्य युवक परिषद् जिला हिसार, श्री बाबूलाल आर्य जूई खुर्द, श्री राम अवतार आर्य लोहारू, श्री अशोक आर्य एडवोकेट बहल, डॉ. एन.पी. गौड़, प्रिं. धूप सिंह आर्य व श्री जय सिंह जांगड़ा बहल, श्री पीताम्बर शर्मा बरालू, श्री नरेन्द्र आर्य सिंघानी, श्री प्रताप सिंह आर्य ढ़िगावा, ब्र. मोहन नैष्ठिक गुरुकुल लाढ़ौत, रोहतक, श्री सत्यपाल आर्य जूई, श्री रामपत महला व मा. सुनील फरटिया, प्रसिद्ध समाजसेवी श्री सत्यवान शास्त्री बाड़ला, श्री कुलदीप आर्य बाड़ला, श्री रमेश कौशिक सोहासड़ा आदि ने अपनी गरिमामयी उपस्थिति से सम्मेलन की शोभा बढ़ाई।

इस अवसर पर चहड़कला गांव के श्री कर्मवीर सिंह, श्री राजेश आर्य व श्रीमती अलका आर्या को विशेष सहयोग के लिए सम्मानित किया गया। उनके अतिरिक्त सम्मेलन में विशेष सहयोग देने तथा इस अवसर पर यज्ञ में सपत्नीक यजमान बनने हेतु सर्वश्री सोमवीर आर्य व उनकी धर्मपत्नी श्रीमती अनीता देवी, श्री राजेश आर्य एवं उनकी धर्मपत्नी श्रीमती अलका आर्या जिला पार्षद, श्री राजेन्द्र सिंह व उनकी धर्मपत्नी श्रीमती धर्मा देवी तथा श्री मनोज कुमार व उनकी धर्मपत्नी श्रीमती सुनीता देवी आदि को भी स्मृति चिन्ह देकर सम्मानित किया गया।

अपने अध्यक्षीय उद्बोधन में स्वामी आर्यवेश जी ने जनता का आह्वान किया कि अब वह समय आ गया है कि हम सभी को गोवंश की रक्षा एवं नशामुक्त भारत बनाने के लिए कटिबद्ध होना पड़ेगा। स्वामी जी ने कहा कि आज बड़े दुःख एवं दुर्भाग्य की बात है कि राम एवं कृष्ण के देश में गोवंश को निर्ममता के साथ समाप्त किया जा रहा है तथा लाखों गाय प्रतिदिन बूचड़खानों में या अवैध तरीके से मौत के घाट उतारी जा रही हैं। इससे भी अधिक कष्ट की बात यह है कि गाय का मांस व गाय का खून डिब्बों में बन्द करके विदेशों को निर्यात किया जा रहा है। स्वामी जी ने कहा कि जिस गाय को भारतीय संस्कृति का मूलाधार माना जाता है आज उसी गोमाता की हमारी आंखों के सामने दुर्गति तथा दुरावस्था हो रही है। स्वामी जी ने स्पष्ट किया कि यद्यपि किसी भी पशु–पक्षी, जानवर की हत्या मांसाहार के लिए की जाती है तो वह अत्यन्त निन्दनीय एवं कष्टदायक है और हम सम्पूर्ण प्राणि जगत की रक्षा के पक्षधर हैं, किन्तु वर्तमान समय में जितना निरादर एवं अपमान गोवंश झेल रहा है वह निश्चित ही असहनीय है। अतः आर्य समाज ने यह निर्णय लिया है कि देशव्यापी गोरक्षा महाभियान चलाकर जहां देश की जनता को जागृत किया जायेगा वहीं सरकार को गोहत्या व गोमांस निर्यात पर पूर्ण प्रतिबन्ध लगाने के लिए दबाव भी बनाया जायेगा। हमें पूर्ण विश्वास है कि भारतीय संस्कृति, राम एवं कृष्ण तथा गोरक्षा को अपनी विचारधारा का मुख्य हिस्सा मानने वाली केन्द्र सरकार देश की जनता की भावनाओं को समझते हुए गोमांस निर्यात एवं गोहत्या पर प्रतिबन्ध लगायेगी। आर्य समाज ने यह निर्णय लिया है कि जब तक गोहत्या पर प्रतिबन्ध नहीं लगता तब तक यह महा अभियान जारी रहेगा और आवश्यकता पड़ी तो प्रचण्ड आन्दोलन भी किया जायेगा।

स्वामी आर्यवेश जी ने शराबखोरी को देश में गरीब, किसान, मजदूर एवं युवाओं के लिए अत्यन्त हानिकारक बताते हुए देश में पूर्ण शराबबन्दी लागू करने की मांग की। इसी तरह महिलाओं पर हो रहे अत्याचार एवं उत्पीड़न को रोकने के लिए जहाँ सख्त कानून बनाना आवश्यक है वहीं युवाओं को भटकाव की ओर ले जाने वाली अश्लील फिल्मों, अश्लील साहित्य, अखबारों के अश्लील विज्ञापन एवं इण्टरनेट पर गूगल में परोसी जा रही पोर्नोग्राफी तथा अत्यन्त अश्लील सामग्री को प्रतिबन्धित किया जाना आवश्यक है। स्वामी आर्यवेश जी ने बढ़ते हुए धार्मिक अन्धविश्वास को रोकने के लिए भी लोगों को जागरूक किया। उन्होंने कहा कि देश के सभी संवैधानिक एवं प्रमुख पदों पर बैठे शीर्षस्थ नेताओं, अधिकारियों, धनाढ्य लोगों, अभिनेता एवं अभिनेत्रियों तथा विख्यात खिलाड़ियों एवं कलाकारों आदि को सार्वजनिक रूप से पाखण्ड एवं अन्धविश्वास फैलाने वाले कार्यक्रमों में शामिल होकर उनका महत्त्व नहीं बढ़ाना चाहिए। यह कार्य संविधान के विरुद्ध है। स्वामी आर्यवेश जी ने चहड़कला गांव में आर्य समाज की स्थापना करके पूरे गांव को आर्य समाज से जोड़ने की अपील की। उन्होंने बताया कि आगामी 12 फरवरी, 2020, महर्षि दयानन्द जन्मदिवस से 18 फरवरी, 2020 तक गोहत्या, नशाखोरी एवं महिला उत्पीड़न के विरुद्ध हरियाणा में जन चेतना यात्रा निकाली जायेगी। जिसमें सैकड़ों आर्य संन्यासी एवं कार्यकर्ता जगह–जगह नुक्कड़ सभाएं, सम्मेलन व रैलियाँ निकालकर जनता को जागरूक करेंगे।

स्वामी आर्यवेश जी ने सम्मेलन की संयोजिका बहन मुकेश आर्या की प्रशस्ति करते हुए कहा कि ऐसी संकल्पवान, स्वाभिमानी एवं उच्चकोटि के आत्मविश्वास से ओत–प्रोत बहन को ऋषि मिशन के कार्य को आगे बढ़ाने में हम सब मिलकर सहयोग करें। स्वामी जी ने इस सम्मेलन में बहन कल्याणी आर्या के विशेष सहयोग की चर्चा करते हुए कहा कि मुकेश आर्या के साथ बहन कल्याणी जी अपना अमूल्य समय देकर यदि सहयोग नहीं करतीं तो आज यह सम्मेलन इतने विशाल स्तर पर सफल होना सम्भव नहीं था। अतः वे भी साधुवाद की पात्र हैं। स्वामी जी ने कहा कि बहन प्रवेश आर्या एवं पूनम आर्या द्वार प्रेरित एवं प्रोत्साहित बहन मुकेश आर्या बेटी बचाओ अभियान में एक मजबूत स्तम्भ के रूप में प्रतिष्ठित हुई हैं। इससे बेटी बचाओ अभियान तथा आर्य समाज का कार्य और अधिक तीव्र गति से बढ़ेगा।

बहन पूनम आर्या ने मनुष्य जीवन को सार्थक बनाने के लिए अपना प्रभावशाली प्रवचन देकर श्रोताओं को और विशेष कर महिलाओं को मन्त्रमुग्ध कर दिया। बहन कल्याणी आर्या के गीतों से उपस्थित श्रोता अत्यन्त प्रभावित हुए और उनकी भूरि–भूरि प्रशंसा की। कार्यक्रम के अन्त में गांव के उन कार्यकर्ताओं का सम्मान किया गया जिन्होंने सम्मेलन को सफल बनाने में अपना महत्त्वपूर्ण योगदान दिया। उनमें श्री पुष्पेन्द्र, श्री चरण सिंह, श्री सत्यपाल श्योरांण पूर्व सरपंच, श्री विनय श्योराण, श्री रामकृष्ण जांगड़ा आदि के नाम उल्लेखनीय हैं। कार्यक्रम के पश्चात् प्रीतिभोज की भी व्यवस्था की गई थी जिसमें समस्त आगन्तुक महानुभावों ने भाग लिया। कार्यक्रम अत्यन्त सफल रहा।

भारत के पूर्व प्रधानमंत्री चौ. चरण सिंह जी के जन्मदिवस 23 दिसम्बर, 2019 को गुरुकुल इण्टर नेशनल स्कूल जिवाना, तह.–बड़ौत, जिला–बागपत, उत्तर प्रदेश में विशेष विचार गोष्ठी का किया गया आयोजन

सार्वदेशिक सभा के प्रधान स्वामी आर्यवेश जी रहे मुख्य वक्ता

प्रो. बलजीत सिंह आर्य ने किया संयोजन तथा श्री सुखवीर सिंह गठीना ने की अध्यक्षता

भारत के पूर्व प्रधानमंत्री स्व. श्री चरण सिंह जी के जन्मदिवस के अवसर पर 23 दिसम्बर, 2019 को गुरुकुल इण्टर नेशनल स्कूल जिवाना, बड़ौत, उत्तर प्रदेश में एक विचार गोष्ठी का आयोजन किया गया। जिसका संयोजन गुरुकुल के संचालक प्रतिष्ठित शिक्षाविद् प्रो. बलजीत सिंह आर्य ने किया तथा अध्यक्षता श्री सुखवीर सिंह गठीना ने की। विचार गोष्ठी में मुख्य वक्ता के रूप में सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान स्वामी आर्यवेश जी ने विचार गोष्ठी में भाग लिया। उनके अतिरिक्त चौ. धर्मपाल सिंह चेयरमैन, प्रिं. धर्मवीर सिंह, श्री अजय सिंह तोमर पूर्व विधायक, श्री मुकेश कुमार, श्री हरपाल आर्य, श्री धन कुमार आर्य, स्वामी ब्रह्मानन्द, ब्र. दीक्षेन्द्र आर्य, श्री धर्मेन्द्र आर्य छपरौली आदि गणमान्य महानुभाव भी उपस्थित थे।

अपने उद्‌बोधन में स्वामी आर्यवेश जी ने स्व. चौ. चरण सिंह जी के जीवन एवं उनके विचारों पर प्रकाश डालते हुए बताया कि चौ. चरण सिंह जी एक ईमानदार तथा उच्च आदर्शों से ओत–प्रोत व्यक्तित्व के धनी थे। उन्होंने पूरा जीवन तप, त्याग और संघर्ष करते हुए बिताया। 1940 से 1942 तक स्वतंत्रता आन्दोलन में वे जेल में रहे। जहाँ उन्होंने 'सदाचार' नामक पुस्तक की रचना की। सन् 1947 में छपरौली से प्रथम बार विधायक बनने के बाद वे 1974 तक 7–8 बार विधानसभा के सदस्य बने। 1977 में लोकसभा के सदस्य के रूप में उन्होंने बागपत का प्रतिनिधित्व किया। केन्द्र में गृहमंत्री, उपप्रधानमंत्री एवं बाद में प्रधानमंत्री के पद को भी आपने सुशोभित किया। आपने अपनी राजनीति सन् 1929 में कांग्रेस कमेटी के सदस्य के रूप में शुरू की थी और बाद में 1932 में जिला बोर्ड मेरठ के सदस्य तथा 1939 में जिला कांग्रेस मेरठ के अध्यक्ष भी रहे। सन् 1946 में गोविन्द बल्लभ पंत सरकार में संसदीय सचिव, 1951 में सूचना एवं न्याय मंत्री तथा 1952 में डॉ. सम्पूर्णानन्द मंत्रिमण्डल में कृषि एवं राजस्व मंत्री बने। 1957 में राजस्व एवं परिवहन मंत्री तथा 1960 में चन्द्रभानू गुप्ता मंत्रिमण्डल में गृह एवं कृषि मंत्री के पद को सुशोभित किया। सन् 1962 में सुचेता कृपलानी मंत्रिमण्डल में कृषि व वन मंत्री रहे तथा 1965 में मंत्रि परिषद् से त्याग पत्र देकर स्थानीय निकाय का कार्य संभाला। 1967 में कांग्रेस से त्याग पत्र दे दिया तथा उत्तर प्रदेश के मुख्यमंत्री बन गये। 1968 में भारतीय क्रांति दल का गठन किया तथा 1969 में 98 स्थानों पर मध्यावधि चुनाव में विजय प्राप्त की और 1970 में पुनः मुख्यमंत्री बन गये। आपने भूमि सुधार व चकबन्दी कानून का निर्माण किया। जातिगत नाम से संस्थाओं के निर्माण पर प्रतिबन्ध लगाया तथा 1974 में लोकदल का गठन कर 104 सीटों पर विजय प्राप्त की और विपक्ष के नेता बनें। आपातकाल में आप गिरफ्तार हुए।

चौ. चरण सिंह जी ने एक गरीब परिवार में जन्म लेकर

उच्च से उच्च शिक्षा प्राप्त कर अपने आपको स्वावलम्बी बनाया और स्वतंत्र रूप से अपनी वकालत शुरू की। प्रारम्भ से ही आप आर्य समाज के साथ सक्रिय रूप से जुड़े रहे तथा गाजियाबाद आर्य समाज में आप कई वर्ष तक मंत्री भी रहे। चौधरी साहब किसानों, कामगारों व कमजोर लोगों के हिमायती थे। वे सदैव इनके उत्थान के लिए संघर्ष करते रहे। उन्होंने देश की आर्थिक गैर–बराबरी, बेकारी और बेरोजगारी के विरुद्ध अनेक आर्थिक नीतियाँ बनाई थी। भारत की गरीबी और इसके समाधान, जमींदारी प्रथा का उन्मूलन, 'भारत की आर्थिक नीति' व 'नाईट मेयर ऑफ इण्डियन इकोनामी' आदि पुस्तकें लिखकर आपने आर्थिक नीतियों पर अपनी गम्भीर सोच और समझ का परिचय दिया। उनका मानना था कि भारत की उन्नति का रास्ता गांव के खेत–खलिहान से गुजरता है। यदि देश को विकास के मार्ग पर ले जाना है तो कृषि और कृषि पर निर्भर देश की 70 प्रतिशत आबादी की आर्थिक स्थिति में क्रांतिकारी परिवर्तन लाना होगा। यदि बहुसंख्य कृषि पर निर्भर जनता की आय बढ़ेगी तो उनकी क्रय शक्ति बढ़ेगी और वे बाजार से जीवनोपयोगी वस्तुएं खरीदेंगे जिससे व्यापारी का व्यापार बढ़ेगा और गरीब, मजदूर कामगारों को भी उचित लाभ होगा। इस प्रकार से महात्मा गांधी की अन्त्योदय योजना को मूर्त रूप देने के लिए वे संकल्पित रहे। लघु एवं कुटीर उद्योग लगाकर वे बेरोजगारी समाप्त करने, खेती पर काम करने वाले लोगों की संख्या कम करके उन्हें अन्य लघु धन्धों में लगाने की नीति पूरे देश को उन्नति की तरफ ले जाने के लिए कारगर थी।

चौ. चरण सिंह जी का व्यक्तिगत जीवन अत्यन्त सरल, सात्विक तथा प्रेरणादायक था। उनकी वेशभूषा, उनका खानपान और उनकी मानसिकता पूर्ण रूप से भारतीय मनीषियों जैसी थी। धर्म के क्षेत्र में महर्षि दयानन्द को वह अपना गुरु मानते थे और राजनीति के क्षेत्र में महात्मा गांधी को। ऐसे महान नेता की नीतियाँ और उनका जीवन आज भी उतना ही प्रासंगिक है जितना उनके समय में था। स्वामी आर्यवेश जी के व्याख्यान से श्रोताओं को अद्‌भुत प्रेरणा मिली और उन्होंने कहा कि इतनी सारगर्भित और अधिकतम जानकारियों से परिपूर्ण व्याख्यान चौ. साहब के बारे में पहली बार सुना है। आयोजकों ने स्वामी जी का हृदय से आभार व्यक्त किया और पुनः–पुनः क्षेत्र में आने के लिए आमंत्रित किया।

गोष्ठी के अध्यक्ष श्री सुखवीर सिंह गठीना ने सभी महानुभावों का धन्यवाद ज्ञापित किया और चौ. साहाब के जीवन पर संक्षिप्त प्रकाश भी डाला। अन्त में प्रो. बलजीत सिंह आर्य ने सभी का धन्यवाद ज्ञापित कर गोष्ठी का उपसंहार किया। विदित हो कि इस अवसर पर तीन दिन तक यज्ञ का भी अनुष्ठान किया गया था जिसका ब्रह्मत्व पं. धन कुमार आर्य ने किया।

पृष्ठ 1 का शेष

आर्य समाज कोलकाता का 134वाँ वार्षिकोत्सव हर्षोल्लास के साथ हुआ सम्पन्न

अभियान एवं आन्दोलन चलायेंगे तो सरकार को भी झुकना पड़ेगा और गोहत्या तथा गोमांस निर्यात के ऊपर प्रतिबन्ध लगाना पड़ेगा।

वार्षिकोत्सव के अवसर पर प्रसिद्ध वैदिक विद्वान् डॉ. ज्वलन्त कुमार शास्त्री के पांडित्यपूर्ण प्रवचनों एवं व्याख्यानों की धूम मची रही और लोग उनसे विविधि विषयों पर शंका–समाधान करते रहे। इसी प्रकार स्वामी श्रद्धानन्द जी के व्याख्यान तथा विदुषी भजनोपदेशिका अजंलि आर्या के भजनोपदेश से जनता खूब आनन्दित रही। मौसम के विपरीत होने एवं अन्य कारणों से यद्यपि उपस्थिति पर सामान्य प्रभाव पड़ा किन्तु समापन के अवसर पर उमड़ी हुई भीड़ को देखकर सभी लोग आश्चर्यचकित थे। पूरा पार्क खचाखच भरा हुआ था और लोग दत्तचित्त होकर प्रातः 11 बजे से 2.30 बजे तक कार्यक्रम सुनते रहे।

वार्षिकोत्सव की सफलता का श्रेय आर्य नेता श्री श्रीराम आर्य के संरक्षण में आर्य समाज के प्रधान श्री मनीराम आर्य, मंत्री श्री मदन लाल सेठ, सभा मंत्री श्री दीपक कुमार आर्य, श्री छोटेलाल आर्य, श्री शिवकुमार आर्य, श्री सत्यप्रकाश आर्य, श्री अच्छेलाल सेठ, श्री सुरेश अग्रवाल, श्री सतीश आर्य आदि को जाता है जिन्होंने दिन–रात परिश्रम करके कार्यक्रम को सफल बनाया। उत्सव में खड़कपुर, टिटलागढ़, त्रिपुरा, बांगलादेश, रांची बिहार आदि से बहुत बड़ी संख्या में लोग पधारे तथा आर्य समाज हावड़ा, आर्य समाज जोड़ा साकू, आर्य समाज बड़ा बाजार तथा स्त्री आर्य समाज भवानीपुर मध्य कलकत्ता ने बढ़–चढ़कर भाग लिया। श्री चांदरत्न दम्माड़ी, श्री रमेश आर्य आर्य समाज बड़ा बाजार से कार्यक्रम में निरन्तर सम्मिलित होते रहे। अन्त में 29 दिसम्बर को रात्रि 8 बजे वार्षिकोत्सव समाप्त हुआ तथा श्री मदन लाल सेठ मंत्री आर्य समाज कलकत्ता ने सभी आगन्तुक महानुभावों का धन्यवाद किया।

Idol Worship & "Teerthas"

There is no mention of idol worship in the Vedas. The concept of idol worship was started by the followers of Jainism. This was out of ignorance. According to the Vedas there is only One God. God is Formless, All-Pervading, Omnipotent, Omniscient and is present every where. How can it be conceived that God is represented by an idol. The ignorant and misguided people are led to believe that idol worship will bring prosperity, righteousness and satisfaction of all the desires. The worshipers waste their lives sitting idle and hoping for a miracle which never happens. The idols are of various forms and shapes and adorn many temples. In some cases idols are adorned with expensive jewellery and clothes. The people are asked to pay for the upkeep of temples and idols. The idols are fed with milk which many misguided people believe.

Every temple has a different idol. The people are given to understand that there are many gods and goddesses. The masses are confused and this leads to disunity and strife among the followers thus weakening the status of Hindus in the eyes of other religions. The idol worshipers in their anxiety wander from temple to temple to appease gods and seek their favours. In reality no favours are obtained and this leads to frustration and nothing else. It is important to understand that there is only One God with many names which describe His qualities. God is present every where and cannot be locked up in temples. This is the teaching which should be imparted to all the Hindus and for the unity of the society it should be adopted. There is no alternative and idol worship should not be promoted.

Teertha means escape from sorrow and it also means a boat. The pilgrim spots whether located on banks of rivers or hill tops do not constitute "teertha". Many misguided pundits or pujaris wrongly advise people seeking solace or to wash their sins to go on teertha yatra. In essence sins cannot be washed away by such visits. God will punish the sinner in one or the other way. No one can escape from His judgment. This is the reason humans should not commit any sins and always speak truth and lead a righteous life. Remember good deeds are always rewarded.

According to Vedas teertha is achieved by:

- Reading and teaching Vedas.
- Associating with scholars and honest people.
- Helping the needy.
- Doing charity work
- Undertaking righteous activity.
- Leading a spiritual life.
- Controlling greed, anger and lust.
- Speaking truth
- Having no malice and pride
- Doing Yoga.
- Respecting parents, teachers and guests.
- Worshiping and devotion to God.

It is good to visit pilgrim spots as a holiday and to admire the nature's beauty but not to seek solace from the idols because it will nor be forthcoming and will only lead to frustration.

Adapted from Arya Patrika, (London)

पृष्ठ 3 का शेष

भारतवर्ष की बदहाली के मूल कारण

तीन नाबालिग अविवाहित बच्चे हैं। वह परिवार प्रत्येक सदस्य के नाम पर व्यवसाय आदि दिखाकर लगभग 3,00,000 x5= 15,00,000 रुपए सालाना आय करने पर भी आयकर से मुक्त है। दूसरी तरफ उतने ही सदस्यों का एक साधारण परिवार है जिसमें केवल परिवार का मुखिया ही काम करता है और साल में 4,00,000 रुपए कमाता है। उसे 3,00,000 से उपर की आय पर आयकर देना होता है। इस दुर्व्यवस्था को ठीक करने के लिए पति, पत्नी और नाबालिग अविवाहित बच्चों की (सबकी) आय को इक्कट्ठा (club) करके उस पर आयकर लगना चाहिए।

14. कर्ज न लौटाने वाले और आत्महत्या करने वाले किसानों को इनाम –

राजनैतिक दलों में होड़ लगी है वोट के लिए किसानों के कर्ज माफ करने की। इसका अर्थ है कि जिन किसानों ने बैंक आदि से कर्ज तो लिया पर लौटाया नहीं, सरकार उनके कर्ज सरकारी खजाने से भरती है। इससे एक बात तो यह है कि यह ईमानदार करदाताओं के धन का दुरुपयोग है और उनकी राष्ट्रभक्ति को निरुत्साहित करना है। दूसरा– जिन किसानों ने कर्ज तो लिए पर लौटाकर अपना फर्ज पूरा नहीं किया उन्हें इस बात का इनाम मिला। तीसरे– जिन किसानों ने अपने कर्ज स्वयं पहले ही लौटा दिए वे अपने आप को ठगा–ठगा महसूस करते हैं और आगे के लिए समझ लेते हैं कि कर्ज तो लो पर लौटाओ नहीं।

और भी, जो किसान अपने ऊपर कर्ज के कारण आत्महत्या कर लेता है, हमारी सरकारें उसके परिवार वालों की आर्थिक सहायता करती हैं। क्या सरकारों का यह कदम आत्महत्या करने का इनाम और आत्महत्या करने के लिए उकसाने वाला नहीं है? ये दोनों कदम अन्यायपूर्ण तथा गलत मानसिकता पैदा करने वाले हैं।

सरकार को अगर किसानों की सहायता करनी है तो उसे किसानों के जीते जी करनी चाहिए, वह भी कर्ज माफी के रूप में नहीं, अपितु उन्हें सक्षम बनाकर।

15. आत्म हत्या का दोषी कौन?– आत्महत्या करने वाला व्यक्ति (A) लिख कर रख जाता है कि व्यक्ति (B) ने उसे तंग किया, इसलिए वह आत्महत्या कर रहा है। सरकार उस व्यक्ति (B) को उसे आत्महत्या के लिए उकसाने के दोष में पकड़कर दण्डित करती है। क्या अजीब न्याय है? दोषी तो आत्महत्या करने वाला व्यक्ति है और दण्ड दूसरे को दिया जाता है। आत्महत्या करने वाला व्यक्ति जीते जी उस व्यक्ति (B) की शिकायत करे, अगर सरकार शिकायत का निवारण न करे तो सरकार दोषी। परन्तु व्यक्ति (A) की आत्महत्या के लिए व्यक्ति (B) तो कतई दोषी नहीं है।

16. हमारा संविधान– बेहद बड़ा है, सम्भवतः संसार में किसी भी दूसरे देश का संविधान इतना बड़ा नहीं है। यह जितना अधिक बड़ा है उतना ही अधिक अस्पष्ट भी है। यह देश को जोड़ने वाला नहीं हैं, तोड़ने वाला है। यह भ्रष्टाचार को जन्म देता है और पालता है। राजनयिक लोग अपने स्वार्थ के लिए अपनी मर्जी से इसमें परिवर्तन कर लेते हैं। अब तक इसमें एक सौ के लगभग संशोधन (परिवर्तन) हो चुके हैं। फिर भी यह राष्ट्र का निर्माण करने में पूरी तरह असफल रहा है। संविधान छोटा, स्पष्ट, देश को जोड़ने वाला, भ्रष्टाचार निरोधक और राष्ट्र का श्रेष्ठ निर्माण करने वाला होना चाहिए।

17. हस्ताक्षर करने का ढंग– हमारे देश में किसी भी दस्तावेज (Document) पर हस्ताक्षर करने का तरीका बड़ा बेढ़ंगा है। उसे कोई पढ़ नहीं सकता, जान नहीं सकता कि हस्ताक्षर किस नाम के व्यक्ति ने किए हैं। यह प्रथा लोगों को अन्धेरे में रखकर धोखा देने की है। अतः दस्तावेज पर हस्ताक्षर के नाम पर व्यक्ति अपना नाम स्पष्ट तौर पर लिखे, यही उचित होगा।

18. देश के कानून– उन्नीसवीं सदी में इंग्लैंड में विलियम ग्लैडस्टन नाम के प्रधानमंत्री हुए हैं, उन्होंने लिखा है– It is the duty of the government to make it difficult for people to do wrong, easy to do right. ..... Good laws make it easy to do right and hard to do wrong.

अर्थात् यह सरकार का कर्तव्य है कि वह लोगों के लिए गलत काम करना कठिन और सही काम करना आसान बनाए। .... अच्छे कानून सही काम करना आसान बनाते हैं और गलत काम करना कठिन परन्तु भारत में स्थिति इसके बिल्कुल उलट है।

19. कुरान और इस्लाम– कुरान मुसलमानों का पवित्रतम ग्रन्थ है। कुरान की हर बात को मानना मुसलमानों के लिए अनिवार्य है और कुरान में लिखी किसी बात पर भी शक करना इस्लाम में अपराध है। कुरान में हर गैर–मुसलमान को काफिर कहा गया है और काफिर को प्रताड़ित करना, मौत का डर दिखाकर उसे मुसलमान बनाना, हर मुसलमान के लिए कर्त्तव्य बताए गए हैं। गैर–मुसलमान को अपने हाथ से मारने वाला मुसलमान सबसे बड़ी पदवी 'गाज़ी' की पाता है। गैर–मुसलमानों पर सब प्रकार से अत्याचार करने का नाम जेहाद है और जेहाद इस्लाम में सबसे अधिक पवित्र काम माना गया है।

और भी– मुसलमान देश में एक समान कानून नहीं बनने देते, जनसंख्या वृद्धि पर नियन्त्रण नहीं लगाने देते, गोहत्या पर पाबन्दी लगाने के विरोधी हैं, देशहित में अपने मुर्दे जलाने को तैयार नहीं, राष्ट्रगान 'वन्दे मातरम्' गाने में उन्हें आपत्ति है। मुस्लिम महिलाओं के लिए समता का कानून भी वे नहीं चाहते। उन्हें दबी कुचली ही रखना चाहते हैं। मदरसों में मुस्लिम बच्चों को कुरान पढ़ाते हैं जो उन्हें दूसरे मजहब वालों से नफरत करना सिखाती है। क्या यह स्थिति राष्ट्रहित में है?

20. अंग्रेजों के खिलाफ प्रचार– हमारे कुछ राजनेता, तथाकथित बुद्धिजीवी और धर्म के ठेकेदार भारत में अंग्रेजी शासन को खूब कोसते हैं और जनता को गुमराह करते हैं। जबकि वास्तविकता यह है कि अंग्रेजों ने देश का श्रेष्ठ निर्माण किया है, अच्छे कानून दिए हैं, समाज की बहुत सी बुराईयों को दूर किया है, अत्याचारी इस्लामी शासन से छुटकारा दिलाया है, दूसरे उन्नत देशों से व्यवहार करने के लिए तथा उनसे तकनीकी (Technology) लेने के लिए अंग्रेजी भाषा दी है।

दूसरी तरफ– मुस्लिम आक्रमणकारियों और शासकों ने देश की जनता पर सब प्रकार के अत्याचार किए, हिन्दुओं पर जजिया टैक्स लगाया, हिन्दुओं के हजारों मन्दिर और मूर्तियाँ तोड़ीं, करोड़ों हिन्दुओं को मौत के घाट उतारा, करोड़ों को मौत का डर दिखाकर मुसलमान बनाया, हिन्दुओं की बहिन बेटियों से बलात्कार किया, हिन्दुओं की सम्पत्ति को जलाया और लूटा, हिन्दुओं को अन्याय से दण्ड दिया आदि। फिर भी अंग्रेजों को गालियाँ देना और मुसलमानों के सम्बन्ध में मुँह बन्द रखना– यह बड़ी कृतध्नता, कायरता और दुष्टता नहीं तो और क्या है?

– 831 सैक्टर 10, पंचकूला, हरियाणा
दूरभाष : 0172–4010679

स्वास्थ्य चर्चा

कम न हो फेफड़ों का दम

बढ़ते प्रदूषण, खराब जीवनशैली और धूम्रपान के कारण फेफेड़ों से जुड़ी समस्याओं में एक तो पहले से ही काफी वृद्धि हो गई है। उस पर ठंड से फेफड़ों से जुड़ी समस्याएं और बढ़ जाती हैं। इसके तीन कारण हैं। पहला, तापमान में तेज गिरावट आने से श्वास नलिकाएं थोड़ी सिकुड़ जाती हैं, जिससे सांस लेने में परेशानी होती है। दूसरा, ठंडी व शुष्क हवा फेफड़ों को नुकसान पहुंचाती है। तीसरा, धुएं व धुंध के कारण प्रदूषण का स्तर बाकी मौसमों की तुलना में अधिक होता है। प्रदूषित वायु जब नलिकाओं और फेफड़ों के सम्पर्क में आती है, तो उनकी कोशिकाओं के डीएनए को नुकसान पहुंचाती है।

फेफड़ों से जुड़ी समस्याएं

हमारे शरीर में फेफड़ों की खास भूमिका है। सांस के जरिए हवा से ऑक्सीजन लेकर उसे खून में मिलाने का काम फेफड़े ही करते हैं। शरीर की कोशिकाओं को काम करने और उसमें आई किसी गड़बड़ी की भरपाई के लिए ऑक्सीजन की जरूरत होती है। शरीर को पर्याप्त ऑक्सीजन नहीं मिलने पर सांस ही नहीं, दिल से जुड़ी समस्याएं भी बढ़ने लगती हैं। शरीर से कार्बन डाईऑक्साइड को बाहर निकालना और उसकी मात्रा को बढ़ाकर या घटाकर पीएच में बदलने का काम फेफड़ों के जिम्मे ही होता है। इसके अलावा, वे शिराओं में बनने वाले छोटे–छोटे रक्त के थक्कों को फिल्टर करते हैं। खून में पाये जाने वाले रसायन एंजियोटेनसिन को भी परिवर्तित करते हैं। यह रसायन रक्तदाब को नियंत्रित करने में मदद करते हैं। फेफड़ों से जुड़े कुछ रोग इस प्रकार है।

अस्थमा :– श्वास नलियों में सूजन आ जाती है, जिससे वह सिकुड़ जाती हैं और सांस लेने में परेशानी होती है। समय रहते इसे नियंत्रित न किया जाये तो फेफड़ों में हवा भर जाती है और वो फूल जाते हैं। इससे अस्थमा के अटैक का खतरा बढ़ जाता है।

ब्रोंकाइटिस :– ब्रोंकाइटिस ब्रोंकियल ट्यूब यानी श्वास नलिकाओं की सूजन है। ब्रोंकाइटिस दो प्रकार के होते हैं – एक्यूट और क्रॉनिक। सर्दी और फ्लू के वायरस से ही ब्रोंकाइटिस होता है, लेकिन कई बार यह बैक्टीरिया से भी हो जाता है।

फेफड़ों का कैंसर :– इसमें एक या दोनों फेफड़ों में कोशिकाओं का अनियंत्रित विकास होने लगता है। आमतौर पर यह कैंसर उन कोशिकाओं में होता है, जो वायुमार्ग की आंतरिक परत बनाती हैं। ये कोशिकाएं बहुत तेजी से विभाजित होती हैं और ट्यूमर बना लेती हैं। विश्व स्वास्थ्य संगठन के अनुसार, प्रतिवर्ष विश्वभर में 76 लाख लोगों की मृत्यु फेफड़ों के कैंसर से होती है, जो कुल मौतों का 13 फीसदी है।

निमोनिया :– यह फेफड़ों का संक्रमण है, जो बैक्टीरिया या फंगस से हो सकता है। निमोनिया महिलाओं की तुलना में पुरुषों को अधिक होता है, क्योंकि महिलाओं में एस्ट्रोजन इस फंगस से सुरक्षा प्रदान करता है। इसके अलावा, निमोनिया विषैले तत्वों से संपर्क और दवाओं से भी हो सकता है।

पल्मोनरी इडेमा :– पल्मोनरी इडेमा एक स्थिति है, जो फेफड़ों में अत्यधिक तरल पदार्थ भरने के कारण होती है, जिससे सांस लेने में समस्या होती है। यह तरल पदार्थ फेफड़ों के विभिन्न एअर सैक्स में भर जाता है। इसका प्रमुख कारण हृदय से जुड़ी समस्याएं हैं। ये अचानक होने वाला पल्मोनरी इडेमा एक आपात स्थिति है। समय से उपचार ना मिलने पर यह घातक हो सकता है।

टी.बी. :– टीबी यानि ट्युबरक्लोसिस बैक्टीरिया का गंभीर संक्रमण है, जो मुख्य रूप से फेफड़ों को प्रभावित करता है। यह माइकोबैक्टीरियम ट्यूबरक्लोसिस नामक बैक्टीरिया के कारण होता है। टीबी का संचरण संक्रमित व्यक्ति से स्वास्थ्य व्यक्ति में वायु के द्वारा होता है। लेकिन चूंकि यह बैक्टीरिया बहुत शक्तिशाली होता है, इसे पूरी तरह नष्ट करने में 6–9 महीने का समय लग सकता है।

लैम लंग डिजीज (लिम्फैनजियोलियो –मायोमैटोसिस)

फेफड़ों दुर्लभ रोग है, जो युवा महिलाओं को ज्यादा होता है। इस बीमारी में मांसपेशियों की वे कोशिकाएं, जो फेफड़ों, श्वास मार्ग व रक्त नलिकाओं की आंतरिक परत बनाती हैं असामान्य रूप से बढ़ने लगती हैं। ये कोशिकाएं फेफड़ों के उन क्षेत्रों में भी फैल जाती हैं, जहाँ इन्हें नहीं होना चाहिए। फेफड़ों में उपस्थित एअर सैक्स भी फूल जाता है और छोटे–छोटे पॉकेट बना लेता है, जिसे सिस्ट कहते हैं। ये सिस्ट पूरे फेफड़ों में फैल जाते हैं, जिससे सांस लेने में तकलीफ होती है।

फेफड़ों को होता है इनसे नुकसान

धूम्रपान करना और धूम्रपान करने वालों के पास रहना।

प्रदूषित वायु में सांस लेना।

स्तन कैंसर के उपचार में ली जाने वाली रेडिएशन थेरेपी। कैंसर और अनियमित धड़कनों के उपचार में दी जाने वाली दवाएं और एंटीबायोटिक्स।

बढ़ती उम्र के साथ के साथ फेफड़ों की कमजोरी।

बहुत ज्यादा एसिडिटी और अपच।

दांतों की ढंग से सफाई न करना।

क्या होता है रेस्पिरेटरी फेलियर

यह तब होता है, जब फेफड़ों से पर्याप्त ऑक्सीजन रक्त में नहीं पहुंचती है। यह तब भी हो सकता है, जब फेफड़े रक्त से कार्बन डाईऑक्साइड बाहर नहीं निकाल पा रहे हों। इससे शरीर में कार्बन डाईऑक्साइड की मात्रा बढ़ जाती है, जो शरीर के अंगों को नुकसान पहुंचा सकती है। कुछ बीमारियाँ, जैसे सीपीओडी और निमोनिया, जिनमें सांस लेने में समस्या होती है, उसके कारण भी रेस्पिरेटरी फेलियर हो सकता है। इसके अलावा, स्ट्रोक, स्पाइनल कॉर्ड इंजुरी, फेफड़ों के

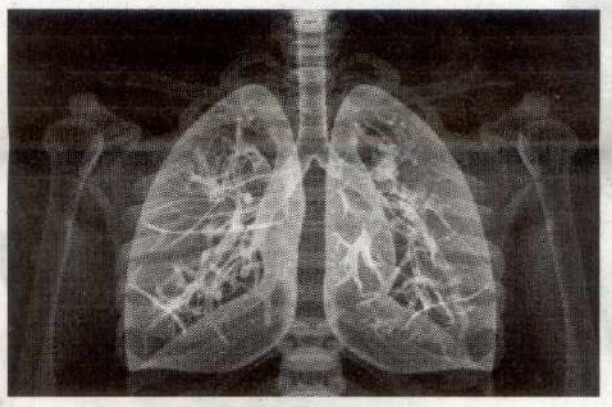

आस–पास के ऊतकों और पसलियों का क्षतिग्रस्त हो जाना, दवाओं और शराब की ओवरडोज तथा धुएं और विषैली गैस के कारण दम घुटने से भी रेस्पिरेटरी फेलियर हो सकता है। पीड़ित व्यक्ति की जान बचाने के लिए ऑक्सीजन थेरेपी और दूसरे उपचार किये जाते हैं।

फेफड़ों की अच्छी सेहत के लिए ....

प्रत्यक्ष अथवा अप्रत्यक्ष धूम्रपान न करें।

शरीर में पानी की कमी न होने दें। फेफड़ों की सबसे अंदरूनी परत, जिसे म्युकोसल लाइनिंग कहते हैं, अत्यधिक पतली होती है। इसे स्वस्थ रखने के लिए रोजाना 6–8 गिलास पानी पियें और दूसरे तरल पदार्थों का भी सेवन करें।

पोषक और संतुलित भोजन का सेवन करें। एंटीऑक्सीडेंट से भरपूर चीजें, जैसे ब्रोकली, फूलगोभी और पत्तागोभी अधिक खाएं। इससे फेफड़ों का कैंसर होने की आशंका 50 प्रतिशत तक कम हो जाती है। ब्रिटेन में हुए एक शोध में यह बात सामने आई है कि जो लोग सप्ताह में तीन बार टमाटर का सेवन करते हैं, उनके फेफड़ों की कार्य प्रणाली सुधर जाती है।

खुलकर हंसे। हंसना फेफड़ों की क्षमता बढ़ाने के लिए अच्छा व्यायाम है। इससे फेफड़ों की सफाई भी हो जाती है।

नमक कैफीन और अल्कोहल का सेवन कम करें।

प्रदूषण से बचें, घर से बाहर निकलें तो स्कार्फ या मॉस्क का उपयोग करें। एअर प्यूरीफिकेशन सिस्टम भी लगवा सकते हैं। पालतू जानवरों के फर के सम्पर्क में आने से बचें। हमेशा खिड़कियाँ और दरवाजे बंद न रखें। ताजी हवा अंदर आने दें।

वजन न बढ़ने दें। वजन का फेफड़ों की सेहत पर सीधा असर पड़ता है। श्वसन तंत्र की मांसपेशियों को कड़ा परिश्रम करना पड़ता है।

शारीरिक रूप से सक्रिय रहें। बाकी शरीर के समान फेफड़ों पर भी शारीरिक निष्क्रियता का असर पड़ता है। फेफड़ों को भी प्रतिदिन 30 मिनट के व्यायाम की जरूरत होती है। एक्सरसाइज, योगा या तेज गति से पैदल चलना, फेफड़ों की क्षमता बढ़ाता है।

सही पॉस्चर रखें। रीढ़ की हड्डी को सीधा करके बैठें, ताकि फेफड़ों को पर्याप्त स्थान मिल सके। दिनभर ऑफिस में कुर्सी पर काम करते हैं तो हर दो घंटे में सीट से उठें या फिर हर दो घंटे में चार–पांच मिनट के लिए कुर्सी पर थोड़ा पीछे की ओर झुक जायें, छाती को थोड़ा सा ऊपर उठा दें और गहरी सांस लें।

– हिन्दुस्तान 15 नवम्बर, 2019 से साभार

जहां नहीं होता कभी विश्राम ओ३म् आर्य युवक परिषद् है उसका नाम

केन्द्रीय आर्य युवक परिषद् के 41 वें वार्षिकोत्सव के उपलक्ष्य में

स्वामी आर्यवेश जी, स्वामी प्रणवानन्द जी, स्वामी धर्ममुनि जी, स्वामी श्रद्धानन्द जी के सानिध्य में

डॉ. अशोक कुमार चौहान की अध्यक्षता व आचार्य अखिलेश्वर जी के ब्रह्मत्व में

वायु प्रदुषण व पर्यावरण की शुद्धि के लिए

251 कुण्डीय विराट् यज्ञ

एवम्

अखिल भारतीय आर्य महासम्मेलन

दिनांक : 31 जनवरी व 1, 2 फरवरी 2020 (शुक्र, शनि व रविवार)

समारोह स्थान: रामलीला मैदान,पी.यू ब्लाक,विशाखा एनक्लेव,पीतमपुरा, दिल्ली (निकट मैट्रो स्टेशन कोहाट एनक्लेव)

राष्ट्रीय एकता तिरंगा यात्रा : शनिवार 1 फरवरी 2020, प्रातः 10.30 बजे

रूट : रामलीला मैदान,विशाखा एनक्लेव से चलकर वाया डी यू ब्लाक,सी यू ब्लाक, अग्रसेन पब्लिक स्कूल, बाहरी रिंग रोड,आर्य समाज विशाखा एनक्लेव,डिस्ट्रिक पार्क,होटल सिटी पार्क, पुलिस स्टेशन मोर्य एनक्लेव, आर्य समाज सी.पी.ब्लाक,पैट्रोल पम्प, एच.यू. ब्लाक होते हुए रामलीला मैदान 1.30 बजे समापन-प्रबन्धक: अरूण आर्य, प्रदीप आर्य, माधवसिंह आर्य, वरूण आर्य। संयोजक-योगेन्द्र शास्त्री, शिवम मिश्रा, हिमांशु वर्मा, राकेश आर्य, केशव आर्य, ओमप्रकाश नागिया, रणसिंह राणा, महेन्द्र टांक, उर्मिल-महेन्द्र मनचन्दा, अरविन्द आर्य, निर्मल जावा,संतोष आर्या, वीरेश आर्य, सन्तोष शास्त्री, वेद प्रकाश आर्य, प्रवीण आर्य, वीरेन्द्र योगाचार्य,विश्वनाथ आर्य, ओमवीर सिंह, के.एल. राणा, प्रकाशवीर शास्त्री, के.के. यादव, सुरेश आर्य, प्रमोद चौधरी, चन्द्रवीर चौहान, देवेन्द्र गुप्ता, जितेन्द्र नरूला,मनोहर लाल चावला, हरिचन्द स्नेही, वीरेश भाटी,प्रदीप गोंगिया, सुशील बाली, ब्रजेश गुप्ता,रामचन्द कपूर, रमेश गाडी, एस.पी. डुडेजा, इन्दू मेहता।

मुख्य यजमान : सर्वश्री दर्शन अग्निहोत्री, टी.आर.गुप्ता (जम्मू), राजीव परम, सुरेन्द्र मानकटाला, प्रेमलता सरीन

शुक्रवार 31 जनवरी, 2020		शनिवार 1 फरवरी, 2020		रविवार 2 फरवरी, 2020	
101 कुण्डीय विराट् यज्ञ	: प्रात: 8.00 से 10.00	यज्ञ	: प्रात: 8.00 से 9.30	151 कुण्डीय विराट् यज्ञ	: प्रात: 8.00 से 10.30
आर्य नारी शक्ति सम्मेलन	: प्रात: 11.00 से 2.00	ध्वजारोहण	: प्रात: 10.00 बजे	ध्वजारोहण	: प्रात: 11.00 बजे
आर्य युवा शक्ति सम्मेलन	: दोपहर 2.00 से 5.00	राष्ट्रीय एकता शोभा यात्रा	: प्रात:10.30 से 1.30	राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन	: 11.30 से 4.00 तक
व्यायाम प्रदर्शन	: सायं 5.00 से 6.00	राष्ट्र रक्षा सम्मेलन	: दोपहर 2.30 से 5.30	आचार्य संजीव रूप जी द्वारा संगीतमय वेद कथा सायं 4 से 6 बजे तक	
आचार्य संजीव रूप जी द्वारा संगीतमय वेद कथा सांय 6 से 8 बजे तक		सामूहिक संध्या	: सायं 5.30 से 6.00	कार्यकर्ता सम्मान – धन्यवाद	
		आचार्य संजीव रूप जी द्वारा संगीतमय वेद कथा सांय 6 से 8 बजे तक		शांतिपाठ समापन	: सायं 6.00 से 6.30

१. दिल्ली के बाहर से आने वाले आर्य बन्धु अपने पधारने की संख्या के बारे में 12 जनवरी 2020 तक सूचित करने की कृपा करें जिससे भोजन व आवास का उचित प्रबन्ध किया जा सके। सम्पर्क : देवेन्द्र भगत-9958889970, दुर्गेश आर्य-9868664800, सौरभ गुप्ता-9971467978

२. कृपया यजमान बनने के इच्छुक आर्य बन्धु अपना यज्ञ कुण्ड 12 जनवरी 2020 तक राजीव आर्य-9968079062, सतीश आर्य-9625048604 देवमित्र आर्य-9313199062, सोहन लाल आर्य-9810716655,आचार्य गवेन्द्र शास्त्री-9810884124 पर आरक्षित करवा लें।

हज़ारों की संख्या में पहुँचकर आर्य समाज की विराट् संगठन शक्ति का परिचय दें

अपील

इस रचनात्मक विशाल कार्यक्रम में आपका तन, मन, धन से सहयोग अपेक्षित है कृपया दानराशी क्रास चैक/ड्राफ्ट द्वारा ''केन्द्रीय आर्य युवक परिषद् दिल्ली'' के नाम से कार्यालय के पते पर भिजवायें। ऋषि–लंगर के लिए आटा, दाल, चावल, चीनी, शुद्ध घी, रिफाईन्ड, सब्जी, मसाले आदि खाद्य सामग्री देकर पुण्य के भागी बनें

कार्यालय : आर्य समाज, कबीर बस्ती, पुरानी सब्जी मण्डी, दिल्ली-110007, मो. 9868051444, 7703922101, 9871581398, 9810114455

E-mail: aryayouthn@gmail.com Website: www.aryayuvakparishad.com

Group: aryayouthgroup@yahoogroups.com • join-http:// www.facebook.com/group/aryayouth

पंजीयन संख्या DELMUL/2005/15488
डाक पंजीकरण संख्या DL(c)-01/1213/18-20
Licence to Post without prepayment of Postage. [U (c)-289/2018-20]

सोशल मीडिया के माध्यम से स्वामी आर्यवेश जी से जुड़ें

आर्य युवा सन्यासी व सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान स्वामी आर्यवेश जी से जुड़ने के लिए इस लिंक पर क्लिक करें
www-facebook-com/SwamiAryavesh व फेसबुक पेज को लाइक करें व अन्य मित्रों को भी प्रेरित करें।
ई-मेल : aryavesh@gmail.com
Tel. :-011-23274771

प्रतिष्ठा में :–

अवितरण की दशा में लौटाएँ –
सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा
"दयानन्द भवन" 3/5 आसफ अली रोड, नई दिल्ली–110002

आर्य समाज के उदीयमान नक्षत्र 'मिशन आर्यावर्त यू–ट्यूब चैनल' के निदेशक तथा सार्वदेशिक आर्य युवक परिषद् हरियाणा के अध्यक्ष योगाचार्य ब्र. दीक्षेन्द्र आर्य का जन्मोत्सव विशेष यज्ञ के द्वारा मनाया गया

सार्वदेशिक सभा के प्रधान स्वामी आर्यवेश जी सहित सभी सहयोगियों ने उन्हें दिया आशीर्वाद और शुभकामनाएं

आर्य समाज के तेजस्वी युवक उदीयमान नक्षत्र 'मिशन आर्यावर्त यू–ट्यूब चैनल' के निदेशक ब्र. दीक्षेन्द्र आर्य का 37वां जन्मदिवस 31 दिसम्बर, 2019 को स्वामी इन्द्रवेश विद्यापीठ आश्रम, टिटौली रोहतक में विशेष गरिमा तथा सादगी के साथ मनाया गया। इस अवसर पर विशेष यज्ञ का अनुष्ठान कर उनके दीर्घायुष्य एवं उज्ज्वल भविष्य की कामना की गई। यज्ञ के उपरान्त उन्हें आशीर्वाद एवं शुभकामनाएं प्रदान की गईं। आशीर्वाद देने वालों में स्वामी आर्यवेश जी, श्री बिरजानन्द एडवोकेट, श्री राम निवास जी, स्वामी ब्रह्मानन्द जी, बहन पूनम एवं बहन प्रवेश आर्या, डॉ. रणवीर सिंह खासा एवं श्रीमती सुनीता खासा, श्री राजवीर वशिष्ठ, श्री राम कुमार सिंह आर्य, डॉ. नारायण सिंह, मा. अजीत पाल, श्री सज्जन सिंह राठी व मा. प्रदीप कुमार जी, श्रीमती सुषमा आर्या, श्रीमती कृष्णा आर्या आदि के नाम उल्लेखनीय हैं। इसी प्रकार सर्वश्री मा. हरपाल आर्य, श्रीमती सुमन, श्रीमती सुकीर्ति, श्री अशोक आर्य, श्री सोनू आर्य खटकड़, श्री अजयपाल आर्य टिटौली, श्री ऋषिराज शास्त्री, श्री रामेश्वर श्योराण कमाण्डो, श्री मनोज कुमार, कु. रिंकू आर्या, कु. शशि आर्या एच.सी.एस., कु. रीमा आर्या, कु. इन्दू आर्या प्रवक्ता, कु. किरण आर्या, कु. सुमन आर्या, कु. दीक्षा आर्या, कु. अंकिता आर्या, चि. आर्यन, चि. अरमान, चि. तरूण, कु. पूजा आर्या आदि ने भी अपनी शुभकामनाएं देकर जन्मदिवस की बधाईयाँ दी। इस अवसर पर एक वट वृक्ष लगाकर पौधा रोपड़ भी किया गया।

यह जन्मोत्सव का कार्यक्रम अत्यन्त प्रेरणादायक तथा मनोरंजन से ओत–प्रोत रहा। ब्र. दीक्षेन्द्र जी ने अन्त में अत्यन्त भावुकतापूर्ण शब्दों में सबका धन्यवाद ज्ञापित करते हुए स्वामी आर्यवेश जी के प्रति विशेष आभार व्यक्त किया और कहा कि स्वामी जी के जीवन से प्रेरित होकर ही मैंने अपने जीवन का रास्ता चुना था। उनकी प्रेरणा आज भी उतनी ही शक्ति प्रदान करती है। आशा है उनका स्नेह मुझे भविष्य में भी इसी प्रकार मिलता रहेगा। मुझे विश्वास है कि आप सभी छोटे–बड़े भाई बहनों के सहयोग से मैं अपने मिशन में आगे बढ़ता रहूंगा। बाद में प्रीति भोज का भी विशेष आयोजन किया गया था जिसमें सभी ने सुमधुर भोजन का आनन्द लिया।

आर्य समाज संजयनगर, गाजियाबाद, उत्तर प्रदेश के तत्वावधान में चतुर्वेद पारायण यज्ञ का आयोजन भव्यता के साथ सम्पन्न

सार्वदेशिक सभा के प्रधान स्वामी आर्यवेश जी तथा सभा के कोषाध्यक्ष पं. माया प्रकाश त्यागी जी उद्घाटन में हुए सम्मिलित

आर्य समाज संजयनगर, गाजियाबाद के तत्वावधान में प्रतिवर्ष की भांति इस वर्ष भी 11 से 17 नवम्बर, 2019 तक भव्य चतुर्वेद पारायण यज्ञ का आयोजन किया गया। इस यज्ञ के मुख्य संयोजक तथा आर्य समाज के प्रधान श्री सेवाराम त्यागी ने अपने सभी प्रमुख सहयोगियों के साथ मिलकर यज्ञ के कार्यक्रम को अत्यन्त प्रभावशाली ढंग से मनाया। यज्ञ के ब्रह्मा पद को गुरुकुल बरनावा से पधारे आचार्य जयवीर दत्त ने सुशोभित किया और अन्य आचार्यों ने विभिन्न वेदियों पर आचार्य का दायित्व निभाया।

यज्ञ के उद्घाटन के अवसर पर सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के यशस्वी प्रधान स्वामी आर्यवेश जी एवं सभा कोषाध्यक्ष पं. माया प्रकाश जी विशेष रूप से सम्मिलित हुए और यज्ञप्रेमी जनता को सम्बोधित किया। स्वामी जी ने यज्ञ की महिमा पर प्रकाश डालते हुए बताया कि प्रत्येक गृहस्थी को पांच महायज्ञ प्रतिदिन अवश्य करने चाहिए। इनमें ब्रह्म यज्ञ अर्थात् ईश्वर की उपासना, देव यज्ञ यानि अग्निहोत्र, पितृ यज्ञ अर्थात् माता–पिता तथा बुजुर्गों की सेवा आदि, बलिवैश्व देव यज्ञ यानि पशु–पक्षी, जीव–जन्तुओं के लिए भोजन एवं उनके प्रति संरक्षण की भावना तथा अतिथि यज्ञ अर्थात् विद्वानों का सत्कार एवं उपदेश ग्रहण करना आदि। इनके करने से जीवन उन्नति की तरफ निरन्तर अग्रसर होता रहता है।

इस अवसर पर पं. माया प्रकाश त्यागी जी ने विश्वानि देव मंत्र का अर्थ बताते हुए कहा कि हमें अपने जीवन से दुर्गुण एवं दुर्व्यसनों को दूर हटाना चाहिए तभी परमात्मा दुखों से हमें छुड़ाता है। यदि हम दुर्व्यसनों में पड़े रहेंगे तो हम उस ईश्वर की कृपा के पात्र नहीं बन सकते। अतः यह आवश्यक है कि हम तीन ताप – आधि दैविक, आधि भौतिक और आध्यात्मिक ताप से मुक्त हो सकें। इस चतुर्वेद पारायण यज्ञ की आहुति 17 नवम्बर, 2019 को हुई और सभी यजमानों को विद्वानों द्वारा विशेष आशीर्वाद प्रदान किया गया।

इस प्रदर्शन में वैदिक मण्डल के संगठनमंत्री स्वामी सोम्यानन्द जी, स्वामी योगानन्द जी, लोकशक्ति मंच हरियाणा के प्रधान श्री धर्मवीर सरपंच, बिहार राज्य आर्य प्रतिनिधि सभा के उपप्रधान श्री रामानन्द प्रसाद जी, उपमंत्री श्री अरूण आर्य, स्वामी सम्यक क्रांतिवेश जी, श्री हरदेव आर्य शिवगंज, श्री चांदमल जी जोधपुर, श्री भंवर लाल आर्य राष्ट्रीय संयोजक आर्य वीरदल, श्री हरि सिंह आर्य, श्री मदन गोपाल, श्री जितेन्द्र आर्य, श्री शिवदत्त आर्य जालौर, श्री दलबीर आर्य, श्री जयवीर आर्य, रमेश आर्य (हिसार), आगरा से श्री रमाकान्त सारस्वत, डॉ. बलवीर आर्य, मास्टर सत्यवीर आर्य, डॉ. राजपाल आर्य, श्री विरेन्द्र लाठर विद्यासागर शास्त्री, श्री जसवन्त आर्य, श्री रामफल दहिया, श्री जोरा सिंह आर्य, आचार्य सोमदेव शास्त्री, श्री चन्द्रदेव शास्त्री, श्री वेद प्रकाश शास्त्री, श्री ऋषिपाल शास्त्री, श्री रामपाल शास्त्री–नरेला, श्री भानू सिंह, श्री तोताराम, स्वामी विजयवेश जी, श्री मायाराम, श्री बाबूलाल जूई, श्री महेन्द्र आर्य–जूई, गुरुकुल गोमत, अलीगढ़ तथा गुरुकुल गौतमनगर के ब्रह्मचारी भारी संख्या में उपस्थित थे, फरीदाबाद से भारी संख्या में महिलाएँ एवं पुरुष प्रदर्शन में उपस्थित हुए।

इस आयोजन का कुशल संचालन कर रहे ब्र. दीक्षेन्द्र आर्य जी ने जयघोषों तथा गगनभेदी नारों से लोगों का उत्साह बढ़ाया तथा सरकार तक अपनी बात पहुँचाने का सफल प्रयास किया। प्रदर्शन तथा जनसभा के उपरान्त प्रो. विद्वलराव आर्य के नेतृत्व में पं. माया प्रकाश त्यागी जी, स्वामी ओमवेश जी तथा श्री रामसिंह आर्य जी ने राष्ट्रपति जी को ज्ञापन भी सौंपा। प्रदर्शन अत्यन्त सफल रहा।

प्रो० विद्वलराव आर्य, सभा मंत्री, प्रकाशक व मुद्रक द्वारा सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा, 3/5 महर्षि दयानन्द भवन, (रामलीला मैदान/आसफ अली रोड), नई दिल्ली-110002 के लिए प्रकाशित तथा ज्योति प्रिंटिंग प्रेस, ई-94, सैक्टर-6, नोएडा-201301 से प्रकाशित एवं मुद्रित। (फोन : 011-23274771, 23260985 टेलीफैक्स : 23274216)
सम्पादक : प्रो० विद्वलराव आर्य (सभा मन्त्री) मो.:0-9849560691, 0-9013251500 ई-मेल : sarvadeshik@yahoo.co.in, sarvadeshikarya@gmail.com वेबसाइट : www.vedicaryasamaj.com
वैदिक सार्वदेशिक साप्ताहिक में छपे लेखों तथा विचारों से सम्पादक या सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा की सैद्धान्तिक मतैक्यता होना अनिवार्य नहीं है।